FMC
FAN MADE COMICS
SPCL-007
जंग
नागराज
शक्तिमान
भोकाल
2017
SAVE INDIAN COMICS
Follow us on Facebook
www.facebook.com/teamfanmadecomics
For Download-singhcomicsworld.blogspot.com

Disclaimer

प्यारे कॉमिक्स जुनूनियों ! एक बार फिर आपके सामने पेश टीम FMC का एक बेहतर कॉमिक विशेषांक जिसका नाम है- 'जंग'। जिसकी कहानी, एडिटिंग और इफ़ेक्ट दिए हैं श्री हुकम महेन्द्रा और कैलीग्राफी की है मैंने यानि बलबिन्दर सिंह ने । इस बार की कैलीग्राफी पर बहुत मेहनत की गई है और एडिटिंग की मेहनत तो देखते ही बनती है। दोस्तों ऐलान-ए-जंग सीरीज का पहला अंक श्री हुकम जी के छोटे सुपुत्र रिशांत महेन्द्रा के जन्मदिवस पर रिलीज़ हुई थी। अतः हमारा प्लान था कि अगला अंक भी श्री हुकम महेन्द्रा जी के बड़े सुपुत्र तनी महेन्द्रा के जन्म दिवस पर रिलीज़ करेंगे। अतः मित्रों आज 26 अक्टूबर को आपके सामने पेश है ऐलान-ए-जंग। सबसे पहले हम श्री हुकम महेन्द्रा जी को उनके सुपुत्र के जन्मदिवस पर बधाई देते हैं । अब पुनः उनकी मेहनत यानी इस अंक के रिलीज की भी हार्दिक बधाई । आशा करते हैं आपको यह अंक बहुत पसंद आएगा और आप अपने बेहतरीन कमेन्ट हमारे ब्लॉग पेज पर भी अवश्य देंगे। मित्रों ! हमारा कॉमिक निर्माण का मकसद किसी प्रकार का मौद्रिक लाभार्जन या पायरेसी करना नहीं है और न ही हमारा मकसद कॉमिक्स पात्रों के कॉपीराइट का उल्लंघन करना है। हमारा मकसद उन पुराने और नये मित्रों को कॉमिक्स की दुनिया से जोड़ना है । हम राज कॉमिक्स के आभारी हैं जिन्होंने हमें नागराज और भोकाल जैसे सुपरहीरो दिए । शेष FMC के अगले अंक में...

धन्यवाद !

बलबिन्दर सिंह
team FMC

तो यह है नागराज का शहर-'महानगर'; यहीं का रक्षक है वो। यहीं होगा दो मानवता के रक्षकों में महायुद्ध, जिसमें से एक को मिलेगी मौत और दूसरे को भी मिलेगी मौत पर वह मौत मैं दूंगा। मौत के इस युद्ध में कोई विघ्न न आए इसलिए इस शहर में मैं अपनी काली शक्तियों को इतना अधिक फैला दूंगा कि दोनों की सोचने-समझने की शक्ति क्षीण हो जाए। दोनों के बीच होगा तो बस क्रोध ही क्रोध और ये क्रोध ही बनेगा अंधेरे की जीत की वजह आखिर क्रोध भी तो अंधेरे का ही एक रूप है। हा हा हा, अंधेरा कायम रहे। अब दो पुण्य-शक्तियों में होकर रहेगी...

RECAP

पूर्व कॉमिक्स 'ऐलान' में आपने पढ़ा-किल्विष अपने गुप्त निवास में सभी शैतानों को इकट्ठा कर शक्तिमान के खिलाफ कोई षड्यंत्र रच रहा है। तभी वहां मिस किलर का आगमन होता है और वो डॉ. जैकाल के साथ मिलकर शक्तिमान और नागराज के खिलाफ एक षड्यंत्र के लिए किल्विष को राजी कर लेती है। योजनानुसार किल्विष मुंबई में तबाही ला देता है और शक्तिमान और महागुरु उसे रोकने पहुँचते है। मिस किलर के षड्यंत्र के अनुसार किल्विष का एक प्यादा एक जहरीला तीर महागुरु के साथी सुर्यांशी पर चला देता है और स्वयं वहां से गायब हो जाता है। अपने साथी सुर्यांशी को बचाने के लिए महागुरु उसे 'कालदूत' का जहर लाने भेजते हैं जहाँ उसका सामना पंचनाग और विसर्पी से होता है जिन्हें हराकर वह कालदूत का भी सामना करता है। कालदूत को हराकर शक्तिमान उसका विष लेकर वहां से चल देता है। कुछ क्षण बाद ही वहां नागराज का आगमन होता है और नागद्वीप, पंचनाग, विसर्पी और कालदूत का हश्र देखकर उसका खून खौल उठता है। अब आगे...

Story, Dialogs
&
Editing By
Hukam Mahendra

Calligraphy by
Balbinder Singh

टीम fmc की प्रस्तुति

जंग

नागराज
शक्तिमान
भोकाल

A Fan Made Comics-Junoon Never Die

नागद्वीप
शक्तिमान ! बहुत घमंड हो गया है तुम्हें अपनी शक्तियों पर। तुम्हारे इसी घमंड को चूर करके नागद्वीपवासियों के रक्त की प्रत्येक बूंद का हिसाब लूँगा मैं तुमसे। इतना भयानक दंड दूंगा कि तुम्हें अफ़सोस करने का मौका भी नहीं मिलेगा।

मुंबई का रखवाला है न तू। उन्ही को तेरा असली रूप दिखाऊंगा कि तू एक रक्षक नहीं बल्कि भक्षक है।
नागराज ने अपने जासूस सर्पो को मानसिक सन्देश भेजा जिसका जल्द ही जवाब आया।

सर्पो का मानसिक सन्देश आ रहा है कि शक्तिमान महानगर में है।

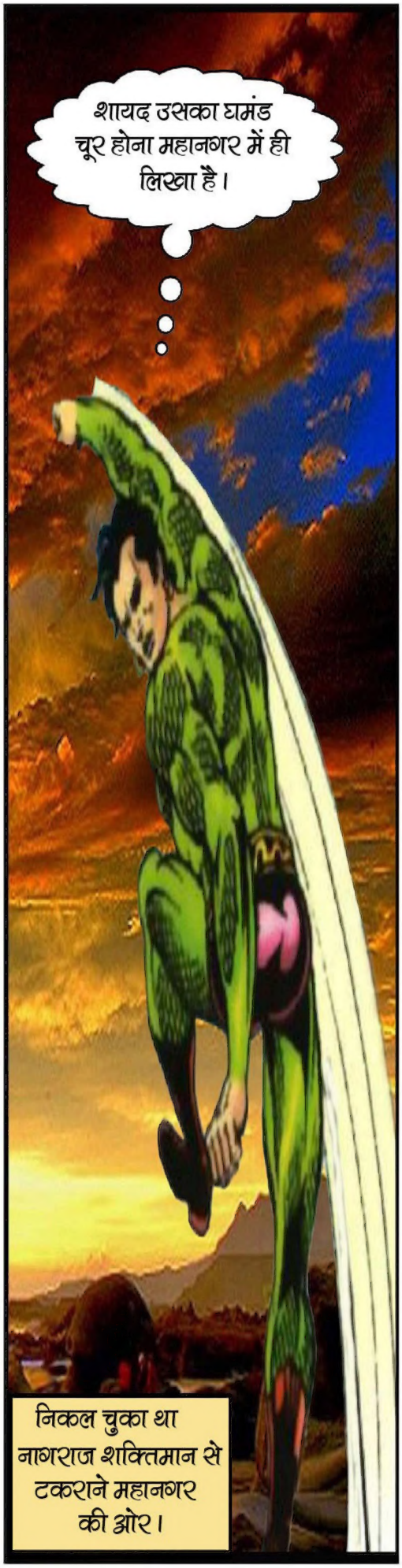
शायद उसका घमंड चूर होना महानगर में ही लिखा है।
निकल चुका था नागराज शक्तिमान से टकराने महानगर की ओर।

अब मुझे इंतजार है तो बस शक्तिमान और नागराज के बीच टकराव का। दो पुण्य शक्तियों के टक-से निकली पुण्य ऊर्जा को एकत्रित करना है उस दिव्य रुद्राक्ष में जिसे मैंने उसकी सही जगह रख दिया है। किल्विष की सोच और पहुँच से दूर। हा हा हा।

बस कुछ समय और बाकी है तुम्हें इस दुनिया में अपना पहला कदम रखने में। इस दुनिया के तुम पहले ऐसे प्राणी होगे जिसमें दो महाशक्तियों का अंश होगा। अब तुम ही मेरे सपनों को साकार करोगे क्योंकि जहाँ पुण्य-ऊर्जा की कमी होगी उसे तुम पूरा करोगे।

पावर। सारी वाह-वाही खुद ही लूटना चाहती हो।

तभी डॉक्टर जैकाल ने प्रवेश किया।

...जबकि ये सब कुछ द ग्रेट शैतान साइंटिस्ट डॉ. जैकाल के बिना असंभव था।

हम्म! तभी मैंने तुमसे मदद मांगी डॉक्टर जैकाल क्योंकि तुम पहले भी क्लोन बना चुके हो। बस ये वाला थोड़ा अलग है।

अब और कितना समय लगेगा। मेरी आँखें तरस रही हैं दो डी. एन. ए को मिलाकर बनाये गये हमारे इस आविष्कार को देखने के लिए।

बस कुछ समय और...

...कृत्रिम गर्भ में इसका विकास लगभग पूरा हो चुका है।

बहुत शैतानी योजना चल रही थी यहाँ पर।

कहाँ है शक्तिमान ? सन्देश तो यहीं से आ रहे थे।
आओ नागराज ! मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था।
इतनी बेसब्री से अपनी मौत का इंतजार करते आज तक किसी को नहीं देखा।
कौन किसकी मौत बनता है यह अभी पता चल जायेगा लेकिन उससे पहले तुम्हारे इन जहरीले दांतों को तोडूंगा। बहुत जहर है इनमें जिसे तुम हर किसी को बांटते फिरते हो।
जहर तो नागराज के पूरे शरीर में दौड़ता है और इतना घातक कि तुम्हें उफ् करने का मौका भी नहीं मिलेगा। और रही दांत तोड़ने की बात तो कोशिश करके देख लो। तुम मेरा हेयर स्टाइल भी नहीं बिगाड़ सकते।
मुझे इतना क्रोध क्यों आ रहा है? खैर जो भी है अच्छा ही है।
तुम्हारा यह घमंड भी मैं अभी तोड़ देता हूँ। इस घूंसे के साथ कितने दांत शहीद हुए यह जरूर बता देना।
मुझ पर वार ! तुम्हारी इतनी हिम्मत...।
क्रोध सिर्फ शक्तिमान को ही नहीं बल्कि नागराज को भी आ रहा था क्योंकि....
...अपना असर दिखा रही थी किल्विष की काली शक्तियां।
चलो अच्छा ही हुआ। अब तुम पहले वार करने की शिकायत तो नहीं करोगे।

...क्योंकि मैं नहीं चाहता कि हारने के बाद तू कहे कि मैंने तुझे कोई मौका नहीं दिया।
नागराज के वार से शक्तिमान दूर तक
.. घसीटता चला गया।
बस इतना ही दम है तुझमें।
दम तो बहुत है नागराज में शक्तिमान और इतना है कि जब मैं अपना दम लगाता हूँ तो सामने वाले का दम ही निकालकर ही छोड़ता हूँ। और यह बात तुझे मैं नहीं मेरे ध्वंसक सर्प बताएँगे।
बड़ाम
ओह! इसके ध्वंसक सर्पों को तो मैं भूल ही गया था।
शक्तिमान का दम निकालना तुझ जैसे सपोले के बस की बात नहीं।

शक्तिमान के इस वार के साथ ही नागराज को यह पता चल गया कि उसे लोग यूँ ही शक्तिमान नहीं कहते।
आह ! ऐसा लग रहा है मानो पूरा पहाड़ ही आ गिरा हो।
देखा नागराज ! शक्तिमान का दम।
लेकिन नागराज भी असाधारण शक्तियों का मालिक था जिसे ऐसे वारों से...

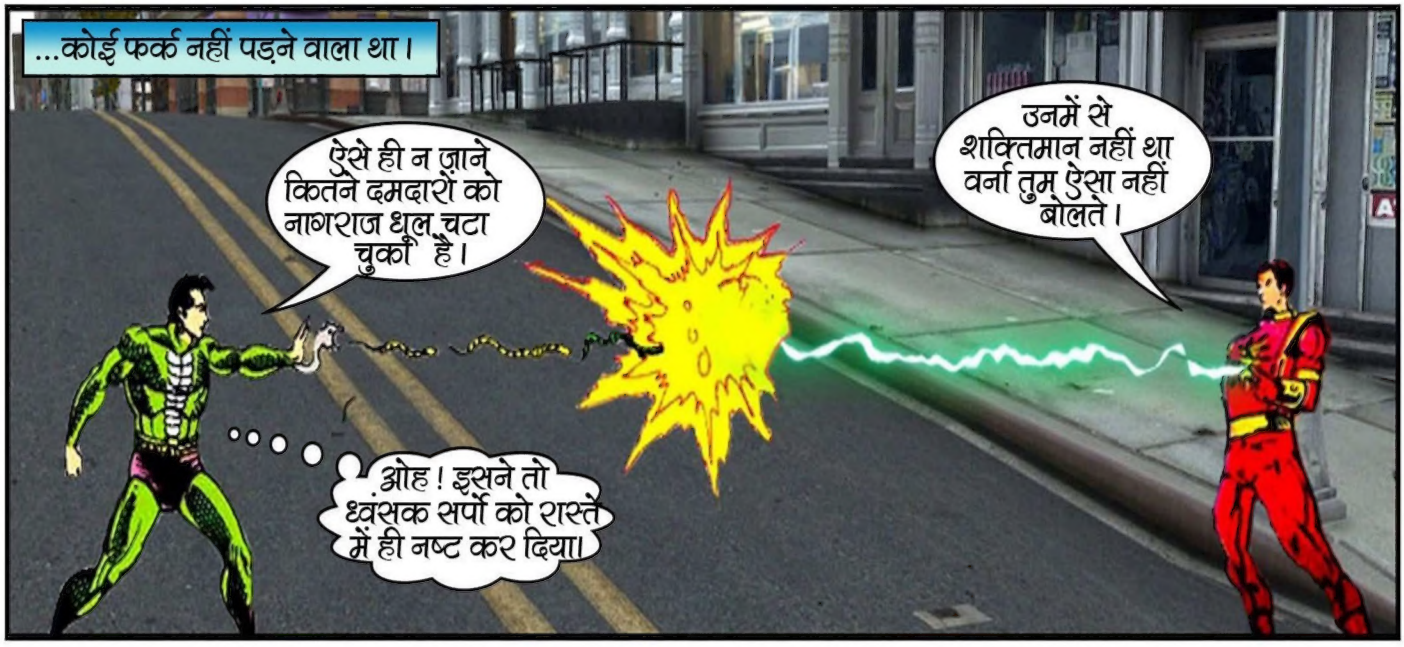
...कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था।
ऐसे ही न जाने कितने दमदारों को नागराज धूल चटा चुका है।
उनमें से शक्तिमान नहीं था वर्ना तुम ऐसा नहीं बोलते।
ओह ! इसने तो ध्वंसक सर्पो को रास्ते में ही नष्ट कर दिया।

तुम्हें यमलोक पहुँचाने के लिए मेरी विष-फुंकार ही काफी है।
तुम्हारी इस विष फुंकार के लिए मेरी फूंक ही काफी है। और देखना इस फूंक के साथ कहीं तू भी न उड़ जाये।
किल्विष की लगाई इस आग में शक्तिमान और नागराज दोनों एक-दूसरे को जलाने पर उतारू थे।

मुझे तुम्हारी शक्तियों का अंदाजा पहले ही लगा लेना चाहिए था। जो इन्सान महात्मा कालदूत जैसे अजेय योद्धा को परास्त कर सकता है वह साधारण शक्तियों का धारक नहीं हो सकता। इसलिए अब मैं तुम्हें और मौका नहीं दूंगा। अब मैं मानसिक वार के साथ-साथ शारीरिक बल का प्रयोग भी करूँगा।
अब से कुछ वर्ष पूर्व के नागराज पर तो शक्तिमान आसानी से काबू पा सकता था...

...लेकिन अब नागराज की शक्तियां भी असीमित थी।
नागराज का रौद्र रूप देख ले शक्तिमान।
नागराज ने उठा लिया शक्तिमान को एक ही हाथ से।
शायद आज शक्तिमान को अपने बराबर का प्रतिद्वन्दी मिला था।
आज नागराज तुझे अपनी शक्तियों से अवगत कराएगा। विसर्पी के हर एक जख्म का हिसाब लूँगा तुमसे...

महात्मा कालदूत के अपमान का बदला लूँगा तुमसे।
पीछे से वार...
बदला तो मैं लूँगा तुमसे। मेरे गुरुदेव पर प्राण घातक हमला कर वाने का और साथ ही अँधेरे का साथ
देने की सजा भी दूंगा मैं तुम्हें..पर मैं तुम्हारी तरह पीठ पर वार नहीं करूँगा।

...बल्कि तुम्हारे सीने पर करूँगा। तुम्हारी छाती फोड़कर उसमें से तुम्हारे प्राण निकालूँगा।
ऐसे न जाने कितने वार नागराज अपनी छाती पर झेल चुका है जिसे मेरे सर्प क्षण...
...मैं भर देते हैं, परन्तु तुमसे यह उम्मींद न थी कि तुम अपना गुनाह छुपाने के लिए मुझे ही गुनाहगार बता दोगे।

अगर मुझसे यह गुनाह हुआ है तो इसका कारण भी तुम हो। जीवन में पहली बार किसी स्त्री पर वार किया तो वह भी सिर्फ तुम्हारे कारण और इसका बहुत भयानक
दंड दूंगा मैं तुम्हें।
ओह! कौन किसे दंड देगा...

...इसका फैसला बातों से नहीं ताकत से होगा और ताकत के मामले में मैं तुमसे किसी भी मायने में... कम नहीं हूँ।
ओह! इसकी बढ़ी हुई शक्तियों के बारे में भूल ही गया था।
सिर्फ क्षण भर के लिए ठिठका शक्तिमान पर...

कोई भी शक्ति पंचतत्व की शक्ति से बड़ी नहीं हो सकती नागराज।

धड़ाक
भूमि, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश, इन पांचों तत्वों की सम्मिलित शक्तियां हैं मुझमें...

जिन्हें मैंने...

उठा लिया एक कार को शक्तिमान ने अपने शक्तिशाली हाथों में और...
...और प्रण लिया है मानवता की रक्षा करने का और मेरे प्रण के बीच आये

...कठोर योग साधना द्वारा अर्जित किया है।

...उछाल दिया उसे नागराज की तरफ।
...हो तुम, इसलिए तुम्हें दण्ड तो देना ही होगा।

जवाब में निकली नागराज की कलाइयों से नागरस्सी।
मानवता के रक्षक हो तो क्या नागमानवों को प्रताड़ित करोगे।
ऐसों को रक्षक नहीं, शक्ति के मद में चूर घमंडी बोलते हैं।

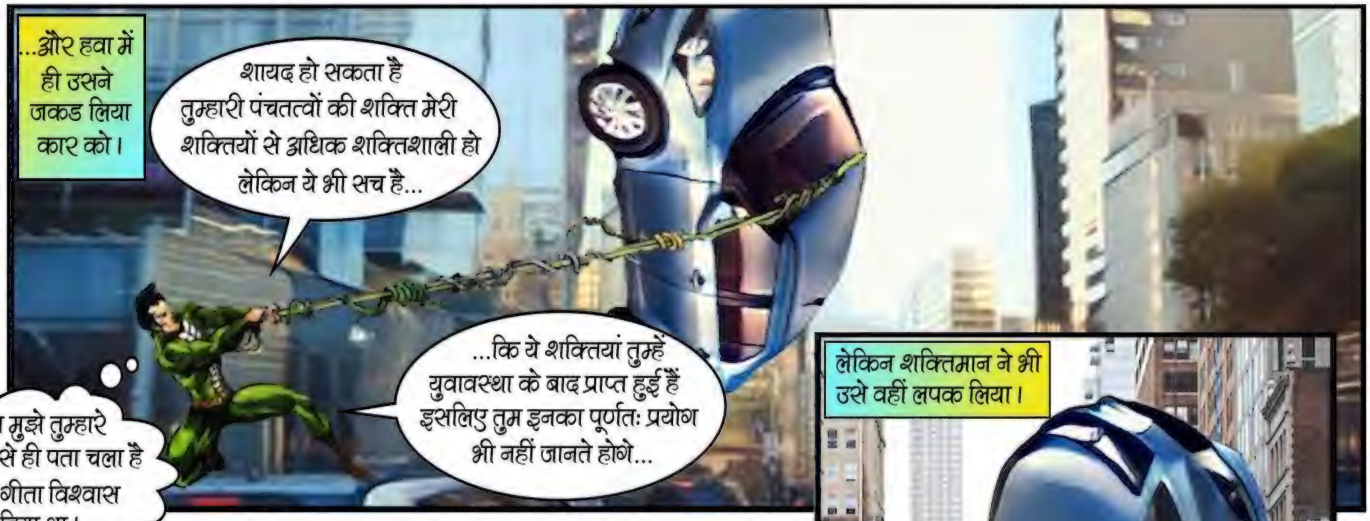
...और हवा में ही उसने जकड लिया कार को।
शायद हो सकता है तुम्हारी पंचतत्वों की शक्ति मेरी शक्तियों से अधिक शक्तिशाली हो लेकिन ये भी सच है...
...कि ये शक्तियां तुम्हें युवावस्था के बाद प्राप्त हुई हैं इसलिए तुम इनका पूर्णतः प्रयोग भी नहीं जानते होगे...
ये सब मुझे तुम्हारे इंटरव्यूह से ही पता चला है जो तुमने गीता विश्वास को दिया था।

लेकिन शक्तिमान ने भी उसे वहीं लपक लिया।
मैं अपनी सम्पूर्ण शक्तियों का प्रयोग नहीं कर सकता यह तुम्हारे मन का वहम है।
चलो देखते हैं मेरा वहम टूटता है या तुम्हारा घमंड।

...परन्तु मेरी शक्तियां मुझे मेरे जन्म के साथ ही मिली हैं और मेरे साथ ही विकसित होती चली आई हैं। साथ ही समय-समय पर मैंने और भी नई शक्तियां प्राप्त की हैं।
...और वापिस फेंक दिया शक्तिमान की तरफ।

तुम्हारे हर वार का जवाब है मेरे पास।
नागराज के इस वार में असीमित बल था जिससे...

...शक्तिमान दूर जा गिरा।

इधर मिसकिलर की लैब में भी क़यामत जन्म ले चुकी थी।

ये बाहर आ रहा है जैकाल।

ये करेगा मेरे सपनों को साकार।

ये तो कमाल का है।

हाँ! वो तो है ही। पर इसे वहां तुम लेकर जाओगे या मैं...!

ये भी कोई पूछने की बात है इसे तो...!

इसे ही ले जाने दूँ, क्या पता कुछ गड़बड़ न हो जाये।

...तुम ही लेकर जाओगी।

तुम जाओ या मैं, कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे तो अब तुमसे

...छुटकारा चाहिए था ताकि अब मैं अपनी आगे की योजना बना सकूँ।

और चल पड़ी मिसकिलर उस क़यामत को अपने साथ लेकर।

लेकिन ध्यान रहे जब तक उन दोनों में से कोई एक मर नहीं जाता या दोनों थक कर चूर नहीं हो जाते तब तक इसे मैदान में मत उतारना।
न जाने इनकी लड़ाई का नतीजा कब निकलेगा। दोपहर से रात हो गई।
मैं भी ऐसा ही कुछ सोच रही थी।

ताकत के साथ दिमाग का भी अच्छा इस्तेमाल कर लेते हो।
यहाँ महानगर में दो महा-शक्तियों का टकराव काफी विध्वंसकारी होता जा रहा था।

...मगर फिर भी तुम मुझसे जीत नहीं पाओगे।
उड़ चले दोनों...

एक दूसरे से...
देखते हैं।

...टकराने के लिए।
नाग-शक्तियों के अलावा और भी अद्भुत शक्तियां हैं इसमें। मुझे अपनी गति बढ़ानी होगी।

ये बहुत तेजी से आ रहा है, मुझे अपनी गति बढ़ानी होगी।

शक्तिमान और नागराज के टकराव से मानो आज पूरा महानगर काँप गया था।

...परन्तु इन दोनों कि जंग निरंतर जारी थी।

जो शक्तिमान होता है उसी की चलती है और पूरी दुनिया जानती है कि शक्तिमान मैं हूँ।
बहुत चला चुका तू अपनी। अब नागराज तुझे अपनी चलाने का कोई मौका ही नहीं देगा।
हम्फ
थड़
...और ये नाम मुझे इसी दुनिया ने दिया है।
तेरे इसी अहंकार को आज मैं चूर कर दूंगा।
उड़ाकर ले गया शक्तिमान को नागराज आसमान में।

नागराज के इस शक्तिशाली वार से दूर तक जा गिरा शक्तिमान...
धाड़
...लेकिन अगले ही पल शक्तिमान ने इसका बखूबी जवाब दिया।
धाड़
आह !
अपनी ताकत का एक-एक कतरा लगा लो नागराज...
...मैं अपने किसी भी इच्छाधारी नाग को नहीं लाऊंगा।
...अपने शरीर के हर एक इच्छाधारी नाग को निकाल लो अपनी सहायता के लिए, फिर भी मैं तुम्हें जीतने नहीं दूंगा।
तुम्हें हराने के लिए मुझे किसी की आवश्यकता नहीं है। ये मेरा वादा है कि तुम्हारे और मेरे बीच में...

तुम्हारे लिए मैं, मेरी नाग-शक्तियां और मेरा बाहुबल ही पर्याप्त है।
महानगर में एक शख्स और भी था जो इस पूरी घटना पर न्यूज़ द्वारा नजर रखे हुए था।
नमस्कार! आप देख रहे हैं FMC न्यूज और आज की सबसे बड़ी खबर है नागराज और शक्तिमान की जंग। ये दोनों लड़ क्यों रहे हैं ये किसी को
नहीं पता, परन्तु इन दोनों की इस जंग से शहर की सार्वजानिक संपत्ति को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है साथ ही पूरे शहर में अपराधिक वारदात बढ़ रही हैं...
..'काल' जो इस पूरी कहानी का रुख बदलने वाला था।
प्रशासन भी हाथ पर हाथ धरकर बैठा है। क्या कोई भी इन दोनों को रोकने के लिए आगे नहीं बढ़ना चाहता।
हम रोकेंगे इनकी जंग को...
...और चल पड़ा इस जंग में अपनी भूमिका।
निभाने।
...हमें शीघ्र ही जाना होगा जहाँ इन दोनों रक्षकों का युद्ध चल रहा है।
कहाँ जा रहे हो?
हमें आज मत रोकना सिया जी। आपने ही कहा था कि जब सही वक्त आएगा तो आप हमें नहीं रोकेंगी। अब वो समय आ गया है।

हाँ ! मैंने कहा था मगर इसका मतलब यह बिलकुल नहीं कि तुम बार-बार जाने की रट लगाओ। लगता है तुम पर भी हीरो बनने का भूत सवार है। मैंने मना कर दिया तो बात यहीं खत्म। तुम कहीं नहीं जाओगे।
ये आपको क्या हो गया है ? आपने कभी भी हमसे इस तरह से बात नहीं की और आप हमें बार-बार क्यों रोक लेती हैं ?
??
ये मेरा घर है और यहाँ मेरी ही चलेगी और तुम्हें मेरी हर बात माननी ही होगी।
कुछ तो गलत हुआ है। हमने कभी भी इनको इतने क्रोध में नहीं देखा। कुछ बुरी शक्तियों का आभास भी हो रहा है हमें। कुछ असुरी शक्तियों जैसा।
यकीनन आपकी ही चलेगी इस घर में और आप का बहुत उपकार भी है हम पर। जब हम बेसुध और बहुत घायल अवस्था में थे तब इस अनजान दुनिया में आपने ही हमारी सहायता की थी। और हमें यहाँ लाने वाली भी आप ही थीं। इसी उपकार का मूल्य चुकाने के लिए हमें जाना ही होगा। हमें क्षमा करना सिया जी।
लगता है सिया जी इन्हीं असुरी शक्तियों के प्रभाव में आ चुकी हैं। और हो सकता है ये पूरा राज्य और दोनों रक्षक भी इसी शक्ति के प्रभाव में हों।
मुझसे दूर जाकर इस तरह मेरे एहसानों का बदला चुकाओगे। तुम तो बहुत खुदगर्ज निकले। ठीक है जाओ पर एक बात कान खोलकर सुन लो, वापिस लौट कर यहाँ कभी मत आना।

हम जा रहे हैं सिया जी और हम वापिस भी यहीं लौटेंगे। और जब हम लौटेंगे तो हमें वही रहमदिल सिया जी मिलेंगी। यह हमारा वादा है।

एक शख्स और निकल पड़ा था जंग के मैदान के में ।

महानगर के दूसरी तरफ जहाँ अब भी जारी थी दो महायोद्धाओं की जंग।

KRAK

घुटने टेक कर माफ़ी मांग लो नागराज, शायद मुझे तुम पर तरस आ जाए।

नागराज ने सदा ही दुश्मनों के घुटने टिकवाए हैं...

बोलते-बोलते अचानक चौंक पड़ा नागराज।

कुछ तो गड़बड़ है...

THOOM

...मुझे इसका पता लगाना होगा।

आह !!

...उसके लिए मुझे शक्तिमान को काबू में करना होगा।
नागराज ये भूल गया कि वह शक्तिमान है जिसे काबू करना ...
...इतना आसान नहीं।
आ ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ ह!
इसे काबू में करना बहुत मुश्किल है। इसकी शक्तियों का कोई अंत नहीं। इसे हराऊँ भी तो कैसे?
नागराज तो शक्तिमान को काबू नहीं कर पाया पर शक्तिमान ने नागराज को बेबस जरूर कर दिया।
बस! अब बहुत हो गया।
KRANKK

अब इस जंग को यहीं खत्म कर दूंगा तुम्हारे प्राण लेकर।

शक्तिमान के क्रोध ने नागराज की जान ले ली।

और फिर वही हुआ जो क्रोध के समाप्त होने पर होता है...

ये मुझसे क्या हो गया ? आवेश में आकर ये कैसा अनर्थ कर दिया मैंने ?

पछतावे से शक्तिमान के नेत्रों से अश्रु बह रहे थे।

मानवता कभी मुझे माफ़ नहीं करेगी। उससे उसका एक रक्षक छीन लिया मैंने।

तभी वहां आगमन होता है मिस किलर का।

अपने आंसुओं को बचा कर रखो शक्तिमान। ये तो कुछ भी नहीं। अभी तो तुम्हें बहुत कुछ देखना और भुगतना बाकी है।

कौन हो तुम और क्या दुश्मनी है तुम्हारी मुझसे ?

मिस किलर ! हाँ इसी नाम से जानती है ये दुनिया मुझे और मेरी तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है। हाँ, इस नागराज से जरूर थी। इसी को मरवाने के लिए मुझे इतना बड़ा षड्यंत्र रचना पड़ा। मैंने ही तमराज किल्विष को नागराज का जहर लाकर दिया था। कई ज्ञानियों, विद्वानों और अपनी तमाम रिसर्च से मैंने यह पता लगा लिया था कि नागराज के यानी देव कालजयी के विष को यौगिक शक्ति और मन्त्रों द्वारा कालदूत के विष द्वारा नष्ट किया जा सकता है। इसके साथ-साथ मैंने यह भी पता लगाया कि तुम्हारी शक्तियां भी यौगिक हैं...

उसके बाद जहर वाला तीर तुम्हारे सुर्याशी महागुरु को मारना, तुम्हारा नागद्वीप जाना ये सब हमने ही प्लान किया था। और हमारे प्लान का हर हिस्सा पूरी तरह से कामयाब रहा।
मिस किलर की बातें सुनकर...

क्रोध का भूचाल नजर आने लगा शक्तिमान के चेहरे पर।
नफरत की ज्वाला भड़क उठी उसकी आँखों में
सिंह सी दहाड़ निकली उसके कंठ से।
इतनी बड़ी साजिश। नागराज और मुझे आपस में लड़वाने के लिए तुमने नीचता की हर हद पार कर दी।
इसका दंड तो तुम्हें मिलकर रहेगा।

रिलैक्स शक्तिमान! मुझे दंड देने से पहले मेरे प्लान का अगला भाग तो जान लो।
...जो है तुम्हारी मौत।

जिस दिन पाप का प्रतिकार करने का प्रण किया था, उसी दिन से अपनी जान हथेली पर लेकर घूमता है शक्तिमान।
शक्तिमान मिस किलर की तरफ जितनी तेजी से बढ़ा...

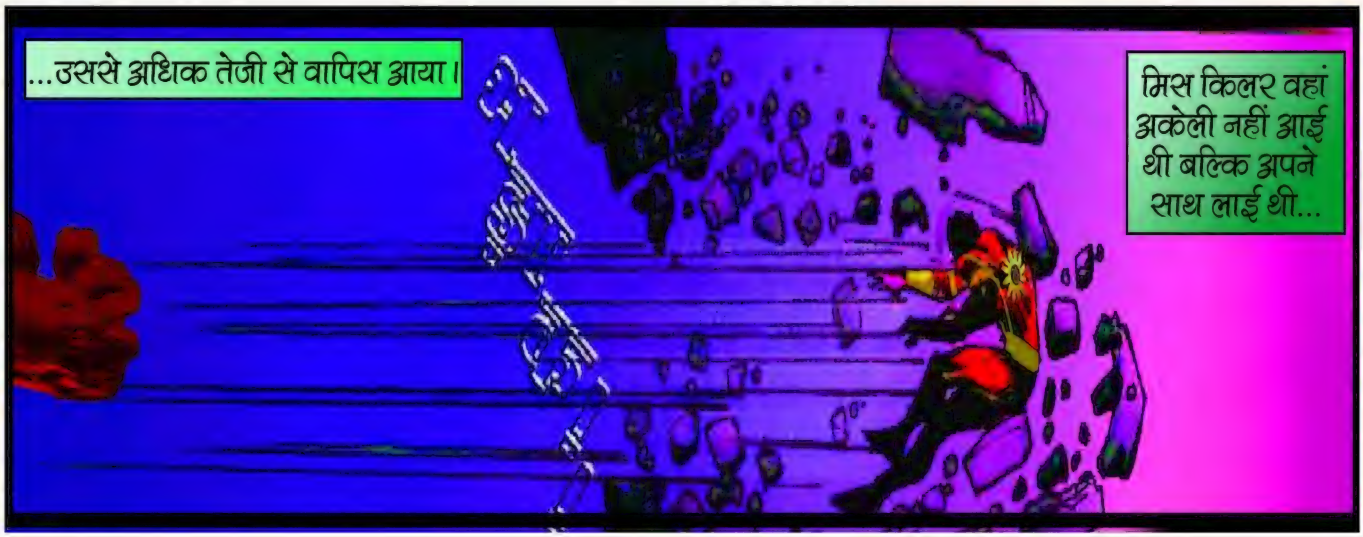
...उससे अधिक तेजी से वापिस आया।
मिस किलर वहां अकेली नहीं आई थी बल्कि अपने साथ लाई थी...

...कयामत।
देख शक्तिमान !
ये है तेरी मौत जिसे मैंने और डॉ. जैकाल ने बनाया है तेरे और नागराज के डी.एन.ए. से। नागराज का डी.एन.ए.तो मेरे पास मौजूद था, कमी थी बस तुम्हारे
डी.एन.ए. की जो मुझे जैकाल से मिल गया क्योंकि उसने पहले भी एक बार तुम्हारा क्लोन बनाया था।
ये आखिर है क्या बला ?

शुरू में थोड़ी परेशानी आई क्योंकि नागराज का जहर तुम्हारे डी.एन.ए को नष्ट कर रहा था। फिर हमने कुछ नए प्रयोग किये और अंत में हम कामयाब रहे। मेरी अत्याधुनिक लैब में हमने निर्माण किया तुम्हारे और नागराज के डी.एन.ए से निर्मित एक भ्रूण जो अब ताकत का पहाड़ बनकर तुम्हारे सामने है जिसमें तुम दोनों की सम्मिलित शक्तियां है।
तुम जैकाल और किल्विष तीनों मिलकर
चाहे ऐसे कितने ही प्राणी बना लो...
...जब तक रोशनी का प्रतीक ये शक्तिमान जिन्दा है तब तक तुम जैसे लोग अपने मकसद में कभी कामयाब नहीं हो सकते।
HRUNCH

क्लोन के शक्तिशाली प्रहार से शक्तिमान दूर तक जा गिरा।
तुम इससे नहीं जीत पाओगे शक्तिमान। नागराज से लड़ते-लड़ते तुम पहले ही बहुत थक गये होओगे।
अब मैं चलती हूँ उस रुद्राक्ष के पास जिसे मैंने किल्विष से मिलने से भी पहले का संभाल कर रखा हुआ है।
और इस यंत्र के अनुसार इन दोनों की लड़ाई से पर्याप्त मात्रा में पुण्य ऊर्जा निकल रही है। डर बस इस बात का है कि शक्तिमान जल्द न हार जाए।
मिस किलर चाल पर चाल चले जा रही थी...
...और शक्तिमान के लिए मुसीबतें बढती जा रही थी।

और वही हुआ जो मिस किलर चाहती थी। इन दोनों के टकराव से निकली पुण्य ऊर्जा नागराज और शक्तिमान के टकराव से निकली पुण्य ऊर्जा के मुकाबले कहीं ज्यादा थी।

आह्ह्ह! यह तो बहुत ताकतवर है। मुझे जल्द ही कुछ करना होगा।

शक्तिमान ने उस प्राणी को अपनी फौलादी बाँहों में जकड़ लिया लेकिन...

अगले ही पल

...एक ही झटके में उसने दूर फेंक दिया शक्तिमान को।

ओह! ये तो नागराज की तरह विष-फुंकार भी छोड़ता है।

और अब उसने नागराज के डी.एन.ए. से मिली एक और शक्ति का प्रयोग किया 'विषफुंकार' का

सर चकराने लगा है।

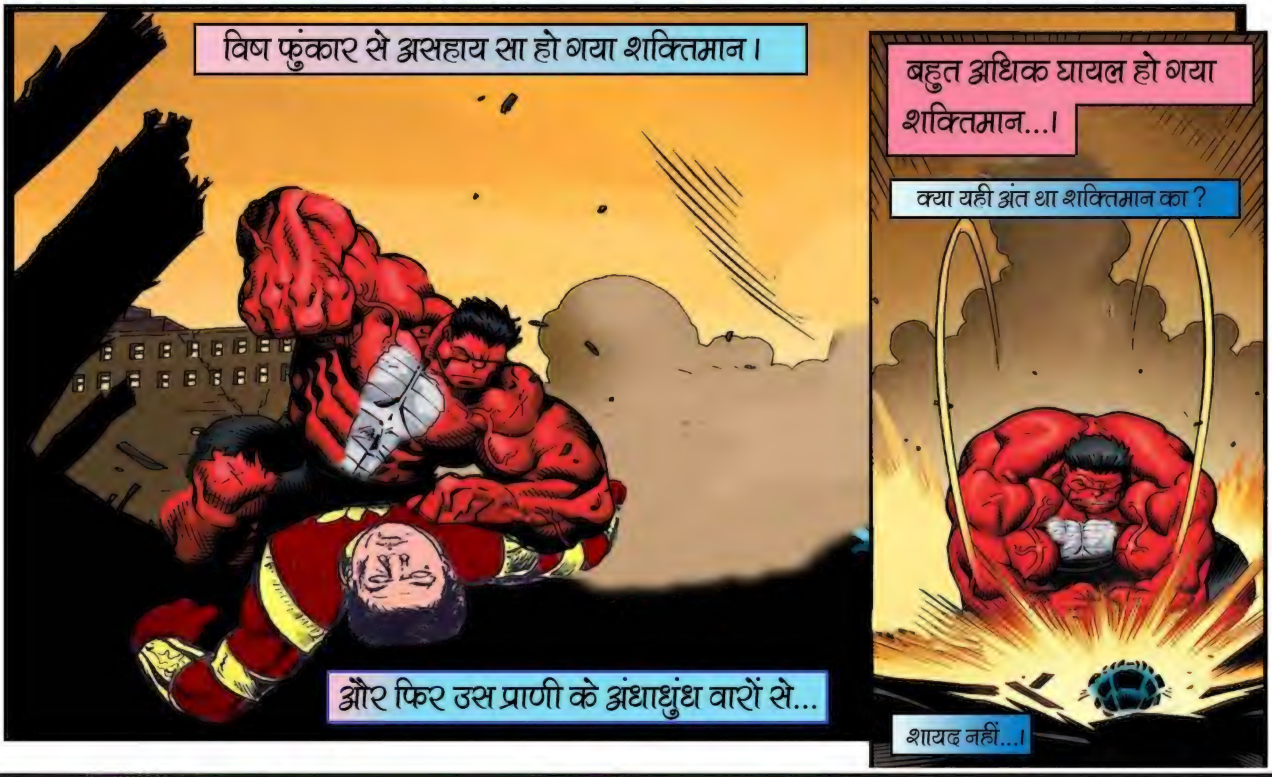
विष फुंकार से असहाय सा हो गया शक्तिमान।
और फिर उस प्राणी के अंधाधुंध वारों से...
बहुत अधिक घायल हो गया शक्तिमान...।
क्या यही अंत था शक्तिमान का ?
शायद नहीं...।

ये हैवान तो शक्तिमान को मार ही डालेगा।

नहीं ! मैं यह यह नहीं होने दे सकता। मुझे शक्तिमान को बचाना ही होगा और इसके लिए मुझे बनना ही होगा...

भो क्का ल

इससे पहले कि वह शक्ति-किरणें शक्तिमान को छूती भोकाल नाम की ढाल बीच में आ गई।
और बचा लिया उसने शक्तिमान को।
आप फिक्र न करें शक्तिमान। हमारे होते यह शैतान आपका बाल भी बांका नहीं कर पाएगा।
विष-फुंकार का असर अभी भी शक्तिमान पर था

अब जंग क्लोन और भोकाल के बीच थी।
Baby
क्लोन कोई वार करता...

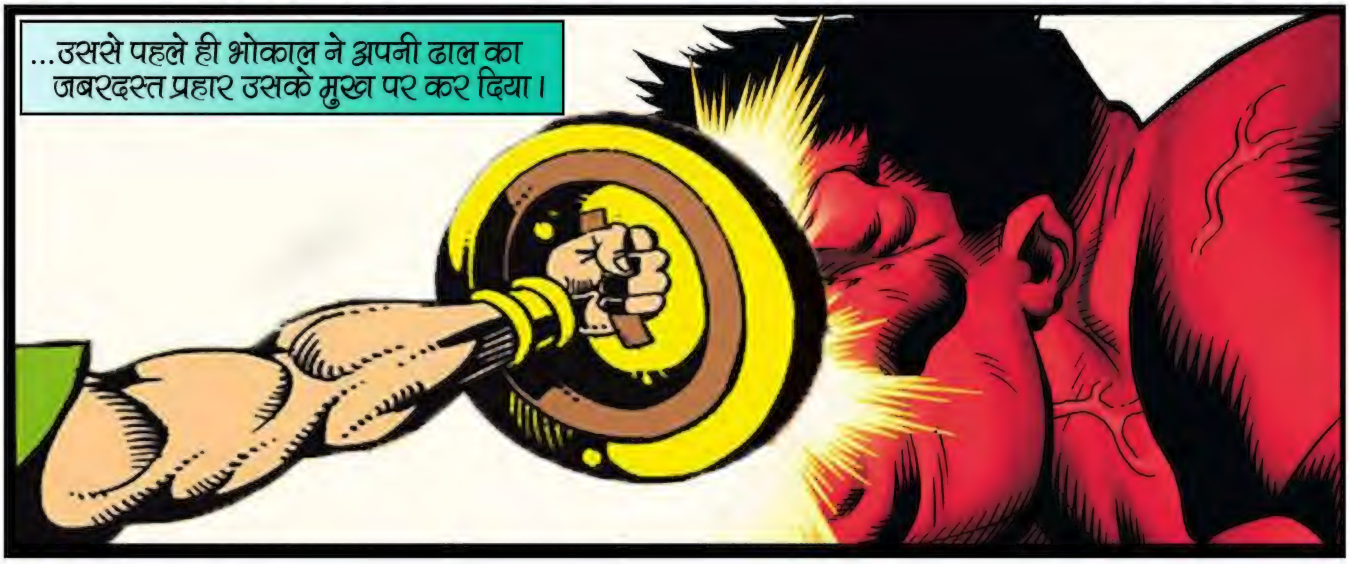
...उससे पहले ही भोकाल ने अपनी ढाल का जबरदस्त प्रहार उसके मुख पर कर दिया।

...परन्तु क्लोन भी कम न था नागराज और शक्तिमान की शक्ति जो थी उसमें।
आह्ह्ह! बहुत शक्तिशाली है ये।

इसका शरीर तो मानो वज्र के समान हो।
SMAK!

इससे पहले भोकाल कोई और वार कर पाता...
.. जकड़ लिया क्लोन ने उसे अपने हाथों में।

परन्तु तभी शक्तिमान के वार ने उसे दूर तक उछाल दिया।

तुम जो भी हो पर मदद करने के लिए धन्यवाद । अब इसे मैं देखता हूँ।
UHUMP!
...क्योंकि शक्तिमान अब अपने होश कायम कर चुका था।
विष फुंकार का असर शक्तिमान पर ज्यादा देर तक नहीं टिक सका।

मेरी तलवार पहाड़ों तक का सीना चीर सकती है फिर इस इस्पात के बने वाहन की क्या बिसात ?
शक्तिमान के वार से क्लोन का क्रोध और भड़क गया।
..और उसने एक विशाल ट्रक को उठाकर शक्ति मान पर पटक दिया।
इस सारे नज़ारे को एक और शख्स भी देख रहा था।
परन्तु शक्तिमान भी किसी मायने में...
और फिर नागरस्सियों ने ट्रक को हवा में ही थाम लिया।
नागरस्सी ?
जिसका एक ही मतलब था...
...कम न था। उसने उस ट्रक को अपने ...
फौलादी हाथों में थाम लिया।

...नागराज जिन्दा है।
नागराज ने वह ट्रक क्लोन पर दे मारा।
नागराज तुम जिन्दा हो ?
हाँ, शक्तिमान ! मैंने तो बस मरने का नाटक किया था।
...ताकि सब कुछ अच्छे से समझ सकूँ और इसके लिए यह सब करना मुझे जरूरी लगा।
मैं कुछ समझा नहीं।
हम भी कुछ समझ नहीं पा रहे।

इस पूरे क्षेत्र में तामसिक शक्तियों का प्रभाव फैला हुआ था जिससे सभी में नकारात्मक ऊर्जा का संचार हो रहा था। मुझमें भी और तुममें भी। यह मैंने महसूस किया। पर यह प्रभाव मुझ पर ज्यादा देर नहीं रुका। इसका कारण शायद मेरे

शरीर में वास करने वाले हजारों सर्प हो।

ये जरूर किल्विष का काम होगा।

हाँ! हमने भी इसका प्रभाव महसूस किया था।

सिया जी में

तुमसे लड़ाई के दौरान मेरे एक जासूस सर्प ने मुझसे मानसिक संपर्क साधा।

उसके अनुसार हमारी लड़ाई को मिस किलर बड़े गौर से देख रही थी और उसके साथ यह क्लोन भी था।

और अपने किसी प्लान के बारे में कुछ बुदबुदा रही थी।

...तब मेरा माथा ठनका और मैं समझ गया कि ये सब उसी का किया धरा है। मैंने तुम्हें यह सब बताने की सोची भी पर तुम पर अभी भी तामसिक शक्तियों का प्रभाव था। इसलिए मैंने मरने का नाटक किया। मुझे लगा ही था कि मेरे मरने पर मिस किलर सामने जरूर आएगी और यही हुआ

शुक्र है ये सब नाटक था और तुम जिन्दा हो।

वैसे तुम्हें तो मेरा नाटक तभी पकड़ लेना चाहिए था जब तुम्हारी गोद में मेरे जख्म भर रहे थे। वैसे अच्छा ही हुआ जो तुम्हारा और मिस किलर का ध्यान इस ओर नहीं गया वर्ना मेरा सब प्लान चौपट हो जाता।

मैं भावुक हो गया था। तभी मेरा ध्यान इस ओर नहीं गया।

हाँ! मैंने देखा, तुम रो रहे थे मेरी मौत पर।

हाँ! मैं महानगर से उसका रक्षक छीनने का शौक मना रहा था।

अब मैं किल्विष की फैलाई तामसिक शक्ति को नष्ट कर देता हूँ।

इसकी जरूरत नहीं है। मैं जब मरने का नाटक कर रहा था तभी मैंने
सौडांगी से मानसिक संपर्क करके उसे इस तामसिक शक्तियों को अपनी तंत्र शक्ति से नष्ट करने का निर्देश दे दिया था।
हम पहली बार मिले भी तो दुश्मनों की तरह।
हाँ! परन्तु जो इन्सान मेरी खातिर आँसू बहा दे, वो मेरा दुश्मन तो कभी नहीं हो सकता।
मुझे तो लगा था कि ये तुम्हारा ही कोई साथी नाग है।
और भला तुम्हें ऐसा क्यों लगा?
अगर दोनों अगर दोनों महारथियों का भरत-मिलाप खत्म हो गया हो तो इस शैतान का वध करने में हमारी सहायता भी कर लें।
आखिर ये है कौन?
दो कारणों से। एक तो इसक कानों में भी कुण्डल हैं और तुम्हारे भी।
दूसरा ये कि तुम दोनों अंडरवियर में हो।
हा हा हा। लेकिन मैं इसे नहीं जानता।

तुमने अभी तक अपना परिचय नहीं दिया।
हम तीनों की शक्तियों के आगे यह टिक नहीं पायेगा।
हमें अपना मित्र ही समझो और हम अपना पूर्ण परिचय अवश्य देंगे...
...किन्तु इस शैतान के अंत के पश्चात।
आह ! मुझे नहीं लगता इसे हराना इतना आसान होगा।
मुझे भी ऐसा ही लगता है, नागराज।
लगता है मैं ही इसका सबसे बड़ा दुश्मन हूँ।
किन्तु इसे हराने का कोई तो उपाय होगा ?
तीनों महारथियों की शक्तियाँ भी क्लोन को रोकने में नाकाम साबित हो रही थी।

एक उपाय है मेरे पास पर वो कितना कारगर सिद्ध होगा ये नहीं पता।
कोशिश करने में क्या हर्ज है ?
जो भी उपाय है जल्दी करो अन्यथा ये हमें ही समाप्त कर देगा।
तो ठीक है मैं अभी आया तब तक तुम दोनों इसे संभालो।
इतना कहते ही शक्तिमान ने वहां से जाने में एक पल भी नहीं लगाया।

उफ़ ! कैसा भीषण विष है ये जो तेजाब से भी हजारों गुना अधिक जलन उत्पन्न कर रहा है।
जरूर कुछ तो आईडिया है शक्तिमान के पास।

महानगर का एक सुनसान बेजान औद्योगिक क्षेत्र।
ये रहा मेरा यंत्र जो पुण्य शक्तियों के टकराव की इस ऊर्जा को इस दिव्य रुद्राक्ष में एकत्रित कर रहा है कितना चमक रहा है। शायद द्वार अब खुलने ही वाला है।

अचानक रुद्राक्ष में से बहुत तेज रोशनी निकलने लगी...
हा हा हा। वो आ रहा है। वो आने ही वाला है।

...और एक द्वार का निर्माण करने लगी।

और उसमें से एक साया सा निकलने लगा।

यक़ीनन मिस किलर ने कोई बहुत बुरी असुरी शक्ति को आजाद कर दिया था...

जिसका असर पूरे शहर में हर तरफ होने लगा।
यार ! ये अचानक मौसम को क्या हो गया ? अभी तो ठीक था।

हाँ, देखो तो कैसी मनहूसियत सी छा गई चारों ओर ।
हाँ, जैसा हॉरर फिल्मों में होता है।
हम्म ! तो क्या चाहती हो तुम मुझसे ?

इस मनहूसियत का एक ही कारण था और वो था ये शैतान जिसे मिस किलर ने आजाद कराया था।
हाँ, और अब श्राप के अनुसार अब तुम मेरे गुलाम हो।
क्या तुमसे ही मुझे इस कैद से आजाद कराया है ?

इस दुनिया पर राज करना, इस दुनिया को अपने कदमों पर झुकाना और वो करोगे तुम, वो भी मेरे लिए।

इस दुनिया पर राज करने का सपना तो मेरा भी था परन्तु मैं ये तुम्हारे लिए भी कर सकता हूँ किन्तु कई वर्षों इस दिव्य रुद्राक्ष में कैद रहने से मेरी शक्तियां क्षीण हो गई है और इस क्षेत्र में मैं कुछ महापुण्य शक्तियों को भी महसूस कर रहा हूँ...
जो मुझे मार तो नहीं सकती अपितु परास्त अवश्य कर सकती है किन्तु मेरी शक्तियां वापिस आ सकती हैं और मैं अपना पूर्ण रूप धारण कर सकता हूँ अगर...

अगर क्या ? कैसे आ सकती है तुम्हारी पूरी शक्ति ?
असुरी शक्तियां ही चाहिए मुझे जिसको मैं ग्रहण कर सकूँ और अपनी पूर्ण शक्ति और रूप पुनः पूण कर सकूँ।
है कोई तुम्हारी नजर में ऐसा शक्तिधारक।

हाँ ! है मेरी नजर में ऐसा एक व्यक्ति परन्तु वो भी बहुत शक्तिशाली है। क्या तुम उससे उसकी शक्तियां छीन पाओगे।
तुम मुझे बस वहां ले चलो बाकी का काम मुझ पर छोड़ दो। मुझे कोई नहीं मार सकता। हा हा हा।

ओह ! मेरे घाव भरने की शक्ति भी इसमें आ गई है।
नागराज ! !
शक्तिमान...! तुम..टेलीपैथी से बात कर रहे हो ?
हाँ !!
भोकाल ! मेरी बात ध्यान से सुनो।
शक्तिमान ! आप दिखाई दे रहे क्यों नहीं दे रहे ?
दिखाई भी दूंगा... वहां पहुंचकर। अब मेरी बात ध्यान से सुनो...।

ये लगा सिक्सर।

और शक्तिमान ने वहां पहुंचकर भोकाल को कुछ समझाया।
तो क्या तुम तैयार हो ?
पूरी तरह से।

और फिर शक्तिमान ने क्लोन पर एक जोरदार प्रहार किया...।
नागराज !
अब तुम्हारी बारी।
ठीक है। पर
तुम करना क्या
चाहते हो ?
और फिर शक्तिमान ने क्लोन पर एक जोरदार प्रहार किया...।

नागरस्सी क्लोन के चारों तरफ लिपट गई।
लो भोकाल! अब तुम संभालो इसे।

भोकाल ने बिना एक पल की देरी किये अपनी तलवार क्लोन के शरीर में घोंप दी।
शक्तिमान के कहे अनुसार हमने अपना कार्य कर दिया है, मित्र नागराज।

क्लोन बहुत अधिक घायल हो चुका था।

अब मेरी बारी है। मैं इससे इसकी सारी शक्तियां ले लूँगा और ये विरोध भी नहीं कर पायेगा। और इसी के साथ इसका काम तमाम।
शक्तिमान के द्वारा सारी शक्तियां लेते ही क्लोन...
...निढाल होकर गिर गया।
मैंने नहीं...हम सबने यह किया। और ये सब महात्मा कालदूत के विष के कारण संभव हुआ।
ये सब कैसे किया तुमने शक्तिमान ? इतनी आसानी से कैसे मर गया ये ?
मैं समझा नहीं, जरा विस्तार से बताओ। तुम गये कहाँ थे ?

ये तो तुम जानते ही हो कि ये प्राणी मेरे और तुम्हारे डी.एन.ए. से मिलकर बना है और तुम्हारा डी.एन.ए मतलब देव कालजयी का विष जिसकी काट मेरे पास है जिसे महात्मा कालदूत के जहर से मेरे गुरूदेव ने योग साधना द्वारा बनाया था। फिर मैंने सोचा अगर ये प्रतिरोधक विष इस क्लोन के शरीर में पहुंचा दिया जाए तो निश्चय ही इसे हानि पहुंचेगी...
...फिर मैंने अपने गुरूदेव से मानसिक संपर्क किया और मालूम पड़ा कि कुछ प्रतिरोधक विष अभी बचा है जिसे वे नष्ट करने वाले थे। मैं तुरंत वो प्रतिरोधक विष ले आया...

...और उस प्रतिरोधक विष को भोकाल की तलवार पर लगा दिया। भोकाल की तलवार क्लोन के शरीर में घुसते ही प्रतिरोधक विष ने क्लोन के यानि तुम्हारे जहर को नष्ट करना शुरू कर दिया और उसका भी वही हाल हुआ जो जहर खत्म होने पर तुम्हारा होता है यानि वह भी कमजोर
क्या आप किसी की शक्तियां भी छीन सकते हैं ?
पड़ गया और बाकी की कसर मैंने पूरी कर दी उससे उसकी शक्तियां छीनकर। इससे वह इतना अधिक कमजोर हो गया कि इसका काम ही तमाम हो गया।

नहीं, किन्तु क्लोन की शक्तियां ले सकता था क्योंकि वह शक्तियां मेरी शक्तियों यानि पंचमहाभूतों की शक्तियों का प्रतिरूप था। किन्तु हाँ, मैं अपनी शक्तियां कुछ समय के लिए किसी में स्थान्तरित कर सकता हूँ।
अद्भुत हैं आपकी शक्तियां, शक्तिमान !
अब आप भी अपना पूर्ण परिचय दीजिए मित्र।

हमारा नाम भोकाल है, यह हमने आपको बता दिया था किन्तु हम इस काल के नहीं है। हम द्वापर युग से हैं। परन्तु हम यहाँ कैसे आये, इससे पहले हम आपको कुछ और भी बताना चाहेंगे यानि आरम्भ से ताकि आप दोनों को हमारी कहानी सरलता से समझ आ जाये। मैं आपको बताने जा रहा हूँ एक महाभयंकर राक्षस कुरूरक्ष के बारे में।

कुरूरक्ष सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता था। इसलिए उसने ब्रह्म देव की कई वर्षों तक घोर तपस्या की।

एक दिन ब्रह्म देव उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसके सम्मुख प्रकट हुए।

मांगो वत्स! क्या चाहिए तुम्हें?

मुझे अमरता का वरदान चाहिए ब्रह्म देव।

किन्तु ब्रह्म देव ने कुरूरक्ष को अमरता का वरदान देने से इंकार कर दिया। परन्तु कुरूरक्ष अपनी बात पर अडिग रहा। ब्रह्म देव ने कुरूरक्ष के समक्ष...

...अमरता के वर के बदले कोई अन्य दो वरदान और कई शक्तियों का प्रस्ताव रखा जिसे कुरूरक्ष ने स्वीकार कर लिया।

तब कुरूरक्ष ने ब्रह्म देव से वर माँगा...

मेरा पहला वर है कि मेरी मृत्यु त्रि-शक्ति के मिलन से ही हो और मेरा दूसरा वर है कि इस दुनिया में कभी त्रि-शक्ति का कभी मिलन ही न हो।

ब्रह्म देव ने कुरूरक्ष को दोनों वर दे दिए...

...और साथ ही कई शक्तियां भी दी।

वरदान और शक्ति मिलने के बाद...

...उसका मानवता पर ऐसा कहर बरपा कि त्राहि-त्राहि मच गई।
पूरा ब्रह्माण्ड चीखों और पुकारों से गूंज उठा।

एक बार कुरुक्ष की कुदृष्टि विराटनगर की राजकुमारी इंद्रा पर पड़ी और उसने उससे विवाह करने की ठान ली।
कुरुक्ष ने अपने विवाह का प्रस्ताव उसके पिता राजा विराट सिंह के समक्ष रखा जिसे राजा ने ठुकरा दिया।

जिससे आहत होकर कुरुक्ष ने विराटनगर को श्मशान बना डाला।
...और फिर राजकुमारी इंद्रा को बलपूर्वक हासिल करना चाहा।

किसी तरह राजकुमारी इंद्रा कुरु-रक्ष से बचकर वहां से भागी।
भागते-भागते अचानक

राजकुमारी के समक्ष एक दिव्य-पुरुष आ गये।
रुको देवी! इस अवस्था में क्यों भागी जा रही हैं आप?
वो दिव्य पुरुष कोई और नहीं बल्कि...

...तिलिस्मदेव थे।
राजकुमारी ने पूरी घटना तिलिस्मदेव को बताई जिसे सुनकर तिलिस्मदेव...
..का क्रोध जाग गया। उन्होंने कुरूरक्ष को दण्ड देने और
...राजकुमारी की रक्षा का प्रण ले लिया।
दोनों में महाभयंकर युद्ध हुआ।
तिलिस्मदेव बहुत शक्तिशाली थे किन्तु कुरूरक्ष को ब्रह्म देव का वरदान प्राप्त था जिसके कारण तिलिस्मदेव जीत नहीं पाए।

...और पराजित हो गये।

तिलिस्मदेव के पराजित होते ही कुरूरक्ष ने एक जघन्य अपराध कर डाला...

किन्तु तिलिस्मदेव ने रोक लिया उसे।

रुक जाओ राजकुमारी! तुम्हारे इस अपमान का बदला मैं तुम्हारे सामने ही लूँगा ये मेरा प्रण है।

आह!!

अपने प्रण को पूरा करने के लिए...

राजकुमारी को अपवित्र कर दिया उसने...।

तेरे रूप और सौन्दर्य ने महाराक्षस कुरूरक्ष का मन मोह लिया है राजकुमारी।

इस कलंक के साथ राजकुमारी इंद्रा अब जीना नहीं चाहती थी और उसने आत्मदाह करने की ठान ली।

...तिलिस्मदेव ने भगवान शिव की महाआराधना की।

जल्द ही भगवान शिव वहां प्रकट हुए...

तिलिस्मदेव ने भगवान शिव को पूरी घटना बताई और इसका निवारण करने की विनती की।

भगवान शिव ने ब्रह्म देव द्वारा दिए गये वरदान के बारे में तिलिस्म-देव को बताया।

हे भगवन! तो क्या यह राक्षस ऐसे ही अधर्म करता रहेगा।

हमने ऐसा तो नहीं कहा वत्स!!

भगवान शिव के तीसरे नेत्र एक रुद्राक्ष प्रकट हुआ।

कुरुरक्ष के अंत का समय अभी नहीं आया है, वत्स किन्तु उसने जो कुकृत्य किया है उससे उसने पर अंत को और भयानक बना लिया है। तुम इस रुद्राक्ष को कुरुरक्ष के समक्ष ले जाना वह स्वतः ही इसमें कैद हो जायेगा। किन्तु ध्यान रहे इसे ऐसे स्थान से दूर रखना जहाँ दो पुण्य-शक्तियां आपस में टकरा रही हों। पुण्य-शक्तियों के टकराव से निकली ऊर्जा इस रुद्राक्ष पर पड़ने से इस रुद्राक्ष की दिव्यता नष्ट हो जाएगी और कुरुरक्ष स्वतन्त्र हो जायेगा। कुरुरक्ष को कैद करने के पश्चात इस रुद्राक्ष को विकासनगर के रक्षक भोकाल को दे देना। अब से वही इसकी रक्षा करेगा।

तो तुम भी रक्षक हो ?

हाँ मित्र ! अब आगे की कथा सुनो...

नहीं SSSSSSS

तिलिस्म देव ने कुरुरक्ष को रुद्राक्ष में कैद कर लिया।

किन्तु इससे भी राजकुमारी इंद्रा को शांति नहीं मिली। मिलती भी कैसे ? इतना अत्याचार जो हुआ था उसके साथ। उसके क्रोध की अग्नि इतनी बढ़ गई कि...

...उसने कुरुक्ष को श्राप दे दिया।

बहुत घमंड है तुझे अपनी शक्तियों पर मैं तुझे श्राप देती हूँ कि जो कोई भी तुझे आजाद करेगा तू सदा -सदा के लिए उसका गुलाम बन जायेगा। यदि तूने इंकार किया तो तेरे सर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।

ये क्या किया आपने। एक पीड़ित की आत्मा से निकली बद्दुआ बड़े से बड़े वरदान को भी बेअसर कर सकती है। आपका श्राप सच होगा और इसके लिए कुरुक्ष को इससे आजाद होना पड़ेगा। और जो भी इसे आजाद करेगा वह भी इसी की तरह अधर्मी ही होगा। इसे शैतान को कोई अधर्मी ही आजाद करना चाहेगा और वह इससे अधर्म ही करवाएगा।

फिर भगवान शिव के आदेशानुसार तिलिस्मदेव ने वह रुद्राक्ष हमें दे दिया और कुरुक्ष से लेकर अब तक की सारी जानकारी हमें बताई।

...और रुद्राक्ष की विशेषताएं बताकर तिलिस्मदेव चले गये।

समय बीतता गया।

एक दिन

बड़ूम

कुरुक्ष के भाई अरक्ष ने...

...कुरुक्ष को आजाद कराने के लिए विकासनगर पर आक्रमण कर दिया।

अरक्ष को अपने गुप्तचरों द्वारा यह पता चल गया था कि रुद्राक्ष हमारे पास है।

अरक्ष बहुत शक्तिशाली था। हम दोनों में बहुत देर तक युद्ध चलता रहा।

कि तभी...

न जाने कैसे उस रुद्राक्ष में रोशनी निकलने लगी।

...और द्वार का निर्माण करने लगी।

अरक्ष और मैं उस द्वार में खिंचते चले गये।

किन्तु हमारा युद्ध चलता रहा।

अरक्ष हमारे सम्मुख अधिक समय तक न ठहर सका और हमने उसका वध कर दिया।

...किन्तु अरक्ष के वारों से हम भी बहुत अधिक घायल हो गये थे और हम मूर्छित होने लगे।

हम अपने होश खोते जा रहे थे।

ये द्वार हमें एक नई दुनिया में ले जा रहा था।

और इस तरह...

...वह द्वार वह द्वार हमें आपके समय में ले आया।

समय यात्रा के समाप्त होते ही रुद्राक्ष स्वतः ही हमारे पास आ गया।

थोड़ी सुध आने पर हमें लगा कि अब हम जीवित नहीं बच पाएंगे कि तभी वहां कोई आया...

हमें वो भली स्त्री लगीं। वो रुद्राक्ष हमने उसे दे दिया और उसकी विशेषताएं भी बता दी क्योंकि हमारे प्राण किसी भी समय जा सकते थे। हमें रुद्राक्ष की चिंता थी।

उन्होंने बोला कि वह डाकू को लेकर आएंगी हमारे उपचार के लिए।

हाँ! शायद यही कहा होगा हमें लगा कि यहाँ वैद्य को डाकू कहते होंगे। अच्छा अब आगे सुनिए।

किन्तु हम गलत थे वह कोई भली स्त्री नहीं बल्कि कोई कपटी थी क्योंकि वह वापिस नही आई। हमारे हाथों से रुद्राक्ष जा चुका था।

हमारे प्राण भी जाने ही वाले थे कि...

...अगर वह ईश्वररूपी मददगार वहां न पहुंचती।

सिया! यही नाम बताया था उन्होंने अपना।

उनकी सेवा और सद्-भावना से हम शीघ्र ही स्वस्थ हो गये।

सिया जी हमें वैद्य के पास ले गई और हमारा उपचार कराया।

...और जब हमने टीवी नामक यंत्र में आप दोनों को लड़ते हुए देखा तो एक रक्षक का फर्ज निभाने हम भी यहाँ आ गये। अब हम बिना रुद्राक्ष के वापिस भी नहीं जा सकते और यदि रुद्राक्ष मिल भी जाए तो भी हम यह नहीं जानते कि वह कैसे कार्य करता है।

हम्म ! तो वह कपटी स्त्री कोई और नहीं बल्कि मिस किलर ही थी।

यह तुम कैसे कह सकते हो नागराज ?

अभी जो हम इतने बड़े दौर से गुजरे इसे देखकर तुम्हें ऐसा नहीं लगता ?

जरा ठीक से समझाओ।

तुम्हारा और मेरा टकराव करवाना मिस किलर की चाल थी पुण्य-ऊर्जा को रुद्राक्ष में डालने की। उसे शायद आभास था कि किल्विष को रोकने के लिए हममें से कोई एक उभर कर आएगा इसलिए

हम्म ! उस रुद्राक्ष में दो नहीं चार-चार पुण्य-शक्तियों के टकराव की ऊर्जा गई है ; तुम्हारी, मेरी, भोकाल और क्लोन की। आखिर क्लोन भी तो हमारी ही शक्ति का प्रतिरूप था।

इसका मतलब हुआ कि कुरुक्ष आजाद हो चुका है।

अगर ये सत्य है तो इस काल में महाप्रलय का आरम्भ हो चुका है। कुरुक्ष पूरी मानव सभ्यता का नाश कर देगा।

नही ! मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।
अपने जीते जी मैं भी उसे कभी विनाश नहीं फैलाने दूंगा।
यह सब हमारे कारण हुआ है। इस लिए इस युद्ध में आप हमें सबसे आगे पाएंगे। इस राक्षस के विरुद्ध हम करते हैं- ऐलान-ए-जंग।
यहाँ एक जंग का आगाज हो चुका था।

और यहाँ एक जंग की तैयारी चल रही थी।
यह है तमराज किल्विष का ठिकाना जिसे शक्तिमान भी कभी नहीं ढूंढ पाया। बहुत मुश्किलों के बाद मैं इसे ढूंढ पाने में कामयाब हुई। यहीं मिलेगा तुम्हें तमराज किल्विष और उसकी असीमित शक्तियां। परन्तु तुम्हें अकेले ही अन्दर जाना होगा। मैं कोई और नया दुश्मन नहीं बनाना चाहती।
हम्म ! यह शक्तिमान कौन है?
बहुत जल्दी जान जाओगे। अगर वह जिन्दा बचा होगा तो ?

अन्दर प्रवेश करते ही उसे सामने खड़ा मिला तमराज किल्विष।
कौन हो तुम ?
कुरूरक्ष नाम है मेरा और मैं एक असुर हूँ। काफी समय से कैद में रहने के कारण मेरी शक्तियां क्षीण हो गई हैं। अपनी शक्तियां पुनः जाग्रत करने के लिए मुझे तुम्हारी शक्तियां चाहिए।
किल्विष को जानते नहीं तुम वर्ना ऐसा दुस्साहस कभी नहीं करते। अब भी समय है लौट जाओ वर्ना अपनी शक्तियों के साथ तुम भी लुप्त हो जाओगे।
लौटने के लिए नहीं आया मैं...
इतना कहते ही कुरूरक्ष ने तमराज किल्विष पर वार कर दिया।
...बल्कि अपनी शक्तियां जाग्रत करने आया हूँ।
...किन्तु तमराज किल्विष पर कोई असर नहीं हुआ।
तो तुम ऐसे नहीं मानोगे। अभी तुम्हें तमराज किल्विष की शक्तियों से परिचित करवाता हूँ।

किल्विष सदा ही अंधेरे के लिए लड़ता आया है...

...लेकिन आज पहली बार बुराई के लिए बुराई से लड़ेगा।
!HUD!

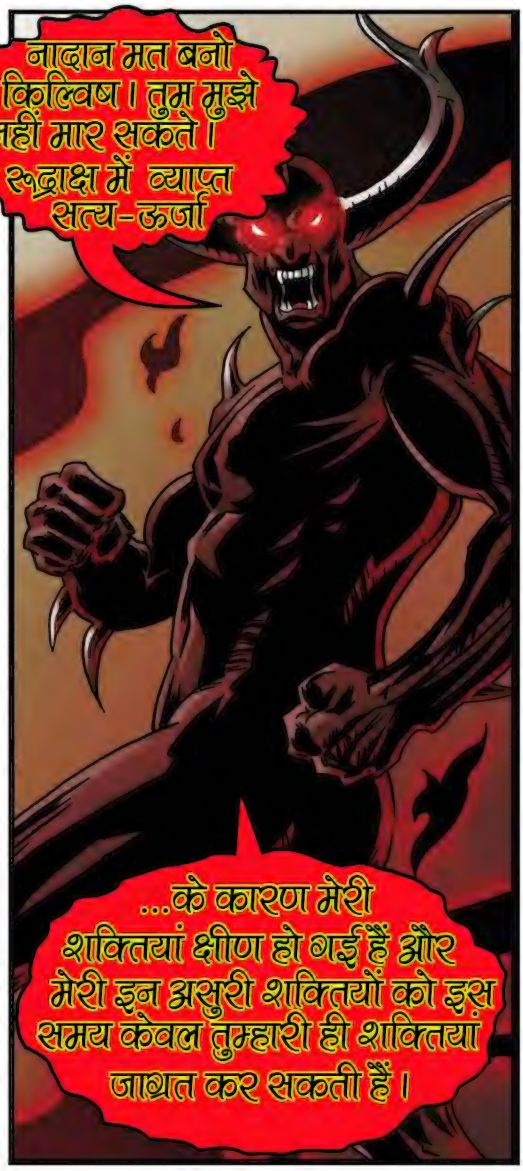
नादान मत बनो किल्विष। तुम मुझे नहीं मार सकते। रुद्राक्ष में व्याप्त सत्य-ऊर्जा
...के कारण मेरी शक्तियां क्षीण हो गई हैं और मेरी इन असुरी शक्तियों को इस समय केवल तुम्हारी ही शक्तियां जाग्रत कर सकती हैं।

मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता परन्तु यदि आवश्यकता पड़ी तो पीछे भी नहीं हटूंगा। मेरी शक्तियां क्षीण होने के पश्चात भी
...तुम्हारी शक्तियां मेरे समक्ष कुछ भी नहीं हैं।

किल्विष की शक्तियों को तुमने अभी देखा ही कहाँ है? देखना चाहते हो किल्विष की शक्तियां

...तो देखो।
वाह! अद्भुत हैं तुम्हारी शक्तियां। यही तो मैं चाहता था...
...कि तुम अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करो और मैं इन्हें ग्रहण करके अपनी उन शक्तियों को जाग्रत कर सकूँ जो...
...जिससे मैं सीधे-सीधे तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध भी तुम्हारी शक्तियां छीन कर खुद ग्रहण कर सकूँ।
अहा! अब मेरी समस्त शक्तियां जाग्रत हो रही हैं और तुम शक्तिहीन हो रहे हो।
...और साथ ही अब मैं अपने पूर्ण रूप में वापिस लौट रहा हूँ।

कुरुक्ष ने अपनी ताकत और रूप प्राप्त कर लिया।
देखो किल्विष! कुरुक्ष का वास्तविक रूप। मेरा कार्य पूर्ण हुआ। मेरी तुमसे कोई शत्रुता नहीं। ये कलियुग है। यहाँ पाप अधिक है...
...इसी बढ़ते पाप की बदौलत...
...तुम अपनी शक्ति पुनः प्राप्त कर लोगे।
कुरुक्ष वहां से जा चुका था।
हा हा हा! अब मेरा सपना साकार होगा कुरुक्ष। तुम्हारी शक्तियों की बदौलत मैं इस दुनिया को घुटने टेकने पर मजबूर कर दूंगी और इसकी शुरुआत होगी नागराज के प्यारे शहर 'महानगर' से।
महानगर
जिस पर पड़ चुका था कुरुक्ष नाम के महाराक्षस का साया।
महानगर अब एक महायुद्ध का रणक्षेत्र बनने जा रहा था।

सुनो, महानगर के वासियों ! एक बार मिसकिलर यानि मैंने खुद से वादा किया था इस दुनिया पर राज करने का और वह वक्त अब आ गया है। इसलिए अब मैं पूरी दुनिया से करने आई हूँ जंग और...
मेरी इस जंग का इकलौता सिपाही है कुरुक्ष। कुरुक्ष को कोई मार नहीं सकता क्योंकि वह अमर है। उसकी शक्तियों का नमूना तो तुम लोग महानगर में देख ही रहे हो। भलाई इसी मे है कि मेरी गुलामी स्वीकार कर लो। मैं तुम्हें जीवित छोड़ दूंगी। इस भूल में बिलकुल मत रहना कि तुम्हें नागराज बचाने आएगा...

...क्योंकि नागराज को तो मैंने पहले ही शक्तिमान के हाथों मरवा दिया है। मैं तुम लोगों को 1 घंटे का समय देती हूँ। या तो घुटने टेको या मरो।
...क्योंकि अब शुरू हो चुकी है ऐलान-ए-जंग।

मिसकिलर जो कह रही थी उसे कुरुक्ष पूरा कर रहा था।
महानगर में कयामत आ चुकी थी।
BOOM
किन्तु मिसकिलर एक बात से अंजान थी...

...कि नागराज न सिर्फ जिन्दा है बल्कि कुरुक्ष से टकराने अपने दो और महाशक्तियों को लेकर आया है।
हमारा अंदाजा सही था नागराज। ये विनाश जरूर कुरुक्ष ने ही किया है। मगर हम उसे कैसे समाप्त करेंगे वह तो अमर है।
हम कोई न कोई उपाय जरूर निकाल लेंगे। उसके हाथों मासूमों को मरने नहीं दे सकते हम।
ईश्वर कभी किसी को अमरता का वर नहीं दे सकते। इसकी मृत्यु का रहस्य अवश्य ही इसके वर में ही होगा किन्तु अभी हमें लोगों को बचाने के साथ-साथ कुरुक्ष को भी रोकना होगा।

नागराज लोगों की जान बचाने में अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल कर रहा था

और यहाँ कुरुक्ष से टकराने भोकाल और शक्तिमान आ चुके थे।
रुक जाओ हैवान! बंद करो ये नरसंहार
लगता है तुम्हें मौत का जरा भी भय नहीं तुच्छ मानवों जो कुरुक्ष के कार्य में हस्तक्षेप करने चले आए।
अगर तुम दोनों मृत्यु ही चाहते हो तो यही सही। करो कुरुक्ष का सामना।
मौत का भय तो उसी दिन चला गया था जिस दिन हमने मानवता की रक्षा का प्रण लिया था।
और भय क्या होता है यह तुम्हें हम दिखायेंगे।
आहहहह!

अभी भी समय है। घुटने टेक दो। शायद मैं तुम्हें जीवित छोड़ दूँ।
अच्छाई सदा ही बुराई के घुटने टिकाती आई है। देर से ही सही पर घुटने तो तुम ही टेकोगे।
आह! तो तुम लोग ऐसे नहीं मानोगे। अब ये ...
...जंग ख़त्म होगी तो केवल तुम दोनों की मृत्यु के साथ।

हमारे नहीं
यह जग खत्म
होगी तुम्हारे अंत
पर।

अंत तो तुम्हारा
ही तुम्हें यहाँ खींच
लाया है।

तुम्हारा कोई
भी शस्त्र मेरे शरीर
को नहीं भेद सकता
भोकाल और शक्तिमान की शक्तियां कुरुक्षेत्र पर बेअसर साबित हो रही थी।

लेकिन नागराज की शक्तियां यहाँ कारगर साबित हो रही थी

नागराज मौत की कगार से भी लोगों को जीवित ला रहा था।

जहाँ सरकारी सेवाएँ भी नहीं पहुँच पा रही थी वहाँ पहुँच रहा था...

...नागराज।

शीतनाग ने शरीर से निकलकर मेरी परेशानी बढ़ा दी है। अगर वह रहता तो मैं पानी को जमा कर बर्फ बना कर ले आता।

ऐसे गोल-गोल घूम कर चक्कर न खाता।

नागराज ने पानी का बवंडर लाकर...

एक पल में आग को बुझा दिया।

थैंक्स, नागराज! अब तुमने हमारी जान भी बचा दी और नौकरी भी।

ओह्ह्ह! लगता है भोकाल और शक्तिमान पास में ही हैं। मुझे जाना होगा।

हा हा हा ! सत्य कहूँ तो मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे मैं बच्चों के साथ युद्ध -क्रीडा कर रहा हूँ।
जिन्हें तुम बच्चा समझ रहे हो उन्हीं के हाथों तुम्हारा अंत होगा।
अंत ? अंत तो बहुत दूर की बात है। तुम तुच्छ मनुष्य मुझे खरोंच तक नहीं पहुँचा पा रहे हो।
बहुत घमंड है न तुझे अपनी शक्तियों पर। इसे घमंड को चूर होने में अधिक समय नहीं लगता। तू अपने मुंह से अग्नि छोड़ता है न...
...तो अब सामना करो मेरे पंचतत्वों में से एक यानि मेरे अग्नि रूप से।
ये तुमने बहुत बड़ी गलती कर दी। किसी भी प्रकार की अग्नि को ग्रहण करने की शक्ति है मुझमें...

...फिर चाहे वो पुण्य -अग्नि हो या सात्विक -अग्नि।

कुरुक्षेत्र शक्तिमान को उसके अग्नि रूप सहित निगलने ही वाला था किन्तु...

नागराज ने यह होने नहीं दिया।

शक्तिमान को निगल जाए इतनी शक्ति नहीं है तुझमें। और हमारे होते तो बिलकुल नहीं।

तुम्हारी कल्पना से अधिक शक्ति है मुझमें। इसे निगल ही जाता यदि तुम बीच में न आते नागमानव।

आह्ह्हह
FWOOSH

शक्तिमान अब संभल चुका था।

कुरुक्ष और त्रिशक्तियां आमने-सामने आ चुकीं थी।
लेकिन तीनों में से किसी को भी यह ज्ञान नहीं था कि कुरुक्ष का अंत कैसे होगा ?

और यह सोचने का अवसर भी कुरुक्ष कहाँ दे रहा था।

अपने इष्टदेव का स्मरण कर लो क्योंकि अब तुम्हें मृत्यु से कोई नहीं बचा सकता।
हमें मृत्यु का भय मत दिखा दुष्ट राक्षस।
हम तो सदा मृत्यु को अपनी हथेली पर लेकर घूमते हैं।
हमारी मृत्यु जब होगी तब होगी पर तुम्हारा नर्कवास तो हम करवा कर जायेंगे।
तीनों के सम्मिलित वार से चीख उठा कुरुक्ष।
आहहहहह

लगा ली तुम लोगों ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति। लेकिन मुझे कोई हानि नहीं पहुँचा पाए...
...किन्तु मेरी शक्तियां तुम्हें ज२२ हानि पहुंचाएंगी।
...क्योंकि कु२२क्ष साक्षात मृत्य है। अजेय है कु२२क्ष।
तुम सबका काल है कु२२क्ष।

कुछ तो करना पड़ेगा शक्तिमान जी। अन्यथा यह राक्षस सम्पूर्ण पृथ्वी का सर्वनाश कर देगा।

हम आखिर करें भी तो क्या ? वरदान के अनुसार इसका वध सिर्फ त्रिशक्ति कर सकती है और दूसरे वरदान

के अनुसार त्रिशक्ति कभी एक नहीं हो सकती।

ऐसा नहीं हो सकता। ब्रह्मदेव के वरदान में ही इसकी मृत्यु का रहस्य अवश्य होगा।

एक क्षण रुकिए। कुरुरक्ष ने वरदान माँगा था कि इस दुनिया में त्रिशक्ति कभी एक न हों, परन्तु यह तो वह दुनिया है ही नहीं। यह तो भविष्य की दुनिया है अर्थात त्रिशक्ति एक हो सकती है।

किन्तु कैसे होंगी त्रिशक्तियां एक ?

यह आप हमसे पूछ रहे हैं। जबकि इसका उत्तर आपके ही पास है। आप ही ने कहा था कि आप अपनी योग शक्ति के माध्यम से किसी की भी शक्तियां कुछ समय के लिए किसी को दे अथवा ले सकते हैं।

हाँ, कहा था। किन्तु मैं नागराज को अपनी शक्तियां दे तो सकता हूँ परन्तु उसकी शक्तियां ले नहीं सकता। उसका दैवीय विष जो हलाहल का अंश है, मेरे शरीर को गला देगा और तुम्हारी शक्तियां मैं नागराज को दे पाऊंगा इसमें मुझे संदेह है।

आप कोशिश करें मित्र ! जगत के कल्याण के लिए किये गये कार्य में ईश्वर स्वयं सहायता करते हैं। हमें विश्वास है आप अवश्य सफल होंगे। मैं अपनी शक्तियां देने के लिए तैयार हूँ।

तो ठीक है मित्र ! मैं कोशिश करता हूँ।

शक्तिमान योग मुद्रा में आ गया।

और फिर शक्तिमान ने अपना कार्य प्रारंभ किया।

ओम

जिसके फलस्वरूप आसमान में...

...एक दिव्य रोशनी प्रकट हुई जो...

...भोकाल में समाहित होकर उसकी...

...शक्तियां लेकर जाने लगी...

...अपने लक्ष्य की ओर।

कुरुक्षेत्र पहले तुम्हें समाप्त करेगा फिर इन दोनों को

और वो मंजिल थी...
नागराज
ये भोकाल की शक्ति है नागराज जिसे मैंने योग साधना द्वारा तुम्हारे अन्दर स्थान्तरित किया है।
ओफ्फ ! मुझे अपने शरीर में भीषण शक्ति का आभास हो रहा है। बहुत अद्भुत शक्ति है ये।
अब मेरी शक्तियां भी ग्रहण करने के लिए तैयार रहो नागराज।
अब मैं अपने अब मैं अपने पंच तत्वों की शक्तियां मेरे इस अग्नि चक्र में समाहित करके तुम्हें दे रहा हूँ नागराज।
...नागराज की ओर जाने लगा।
शक्तिमान का अग्निचक्र उसके शरीर से अलग होकर
आह ! मैं इस शक्ति को सहन नहीं कर पा रहा हूँ। ऐसा लग रहा है जैसे मेरा शरीर अभी फट जायेगा।
संयम से काम लो नागराज। तुम ये कर सकते हो। तुम्हारा शरीर कोई मामूली शरीर नहीं है। हजारों सर्पों का वास है तुममें। तुम हम दोनों की शक्तियों को न सिर्फ
ग्रहण कर सकते हो..बल्कि इनका प्रयोग भी अच्छे से कर पाओगे।
अग्नि चक्र अब नागराज के शरीर का हिस्सा बन गया था।

बस अपना ध्यान केन्द्रित करो। लेकिन याद रहे ये शक्तियां तुम्हारे पास कुछ ही समय के लिए रहेंगी। इतने समय में ही..

...तुम्हें कुरुक्षेत्र का अंत करना है।

मुझे योग साधना में ही रहना होगा। अगर मेरी योग साधना टूट गई तो मेरी और भोकाल की शक्तियां तुम्हारे शरीर से लुप्त हो जाएँगी। इसलिए मेरी

योग साधना न टूटे तुम्हें इसका भी ख्याल रखना होगा।

इसका इंतजाम मैं अभी किए देता हूँ।

हम्फ़! अब मैं खुद को संतुलित महसूस कर रहा हूँ।

नागराज शक्तिमान की शक्तियों को ग्रहण कर चुका था।

अब महागुरु भोकाल का नाम पुकारो नागराज और उनकी शक्तियां धारण करो।

बिना भोकाल शक्ति के

...भोकाल भी अपने छद्म रूप में लौट चुका था।

भौ sss का sss ल

भोकाल शब्द पुकारते ही नागराज के पास भोकाल की भी समस्त शक्तियां आ गई।
और बन गया वह...
त्रिशक्ति धारक...
कुरुक्ष का काल।

अपने काल रूपी त्रिशक्ति धारक नागराज को देखकर सहम गया कुरुक्ष।
असंभव ! ऐसा कैसे हो सकता है ? त्रिशक्तियां एक कैसे हो सकती हैं ?
क्योंकि ये वो दुनिया नहीं है जिस दुनिया में तुमने त्रिशक्ति एक न होने का वर माँगा था।
इसलिए यह संभव हो चुका है और इसी के साथ संभव हो चुकी है तेरी मौत।

त्रिशाक्तियाँ धारण करके तुम अमर नहीं हो गये। मेरे समक्ष तो देवता भी आने का साहस नहीं करते तो तुम्हारी बिसात ही क्या है तुच्छ मानव।
मानवों को तुच्छ समझने की भूल तो रावण को भी बहुत भारी पड़ी थी।
आह
मैं रावण नहीं हूँ। राक्षसों में सबसे क्रूर कुम्भकर्ण हूँ मैं।
जितनी क्रूरता तुमने यहाँ दिखाई है न उतनी ही क्रूरता से मैं तेरा वध करूँगा।
हा हा हा! यह सब तुम इस सुर्याशी के कारण बोल रहे हो न जिसने तुम्हें यह शक्तियां दी हैं...

...अभी मैं इसकी योग साधना भंग किये देता हूँ।
सौडांगी के इस तंत्र-कवच को तेरी असुरी शक्तियां भी नहीं भेद पाएंगी दुष्ट राक्षस।
मुझे आने में देर तो नहीं हुई न नागराज।

तुम बिलकुल सही समय पर आई हो सौडांगी।
तुम लोगों के इस दुस्साहस का दण्ड अब समस्त मानवजाति भोगेगी। इस संसार से मानवों का सम्पूर्ण अस्तित्व मिटा दूंगा मैं। अब तुम लोगों ने मुझे विवश कर दिया है मेरा विकराल रूप धारण करने पर।

कुरुक्षेत्र का यह रूप बहुत भयावह था।
मानो पाताललोक का कोई हैवान आ गया हो वहाँ।
नर्क जैसा माहौल हो गया था वहाँ।

तुझे मारकर तेरी आत्मा को सदा के लिए अपना गुलाम बनाऊंगा मैं।

जो खुद किसी का गुलाम हो वह किसी को गुलाम क्या खाक बनाएगा।
नागराज के इस कथन से चिढ़ गया कुरूरक्ष।

गुलाम ! तुमने मुझे गुलाम बोला। तुम्हारी इस धृष्टता का तुझे मैं वह दण्ड दूंगा कि ईश्वर भी कांप उठेगा फिर से मानवजाति का निर्माण करने से पहले।

तेरे साथ ही तेरे नगरवासी भी मेरी क्रोधाग्नि में जलकर भस्म हो जायेंगे।
इसको जल्दी ही खत्म करना होगा अन्यथा यह पूरे शहर को शमशान में बदल देगा।

...क्योंकि तेरा अंत समय अब आ गया है।
अपने पापों की गिनती शुरू कर दे कुरुक्ष ...
शक्तिमान की शक्तियां तो कमाल की हैं।
आ..ह..ह..ह..हा
अब भोकाल की तलवार से ही इसका अंत होगा।
ग..ड..ग..ड
ये वही हाथ है न कुरुक्ष जो एक स्त्री की पवित्रता भंग करने के लिए बढ़े थे।
ज्वालामुखी सा फूट पड़ा भोकाल की तलवार में से।

नागराज ने तलवार कुरुक्ष की तरफ फेंक दी...

और तलवार के साथ कई सर्प छोड़े...।

भोकाल की तलवार आज ब्रह्मास्त्र से कम नहीं लग रही थी जो कुरुक्ष की तरफ बहुत तेजी से बढ़ रही थी।

...और एक ही झटके में कुरुक्ष का हाथ उसके शरीर से जुदा हो गया।

दर्द और भय के मारे कराह उठा कुरुक्ष।

और भय कैसे न हो जब सामने अपनी मौत नजर आ रही हो।

...नागराज के रूप में।

नागरस्सियों के द्वारा तलवार स्वतः ही नागराज के पास आ गई।

तेरा अंत देखकर आज दुनिया के हर शैतान की रूह कांप उठेगी।

तलवार के साथ नागराज ने नागसैनिकों की एक पूरी फ़ौज छोड़ दी।

...जो तलवार से लिपट गई।

तलवार कुरूरक्ष की गर्दन को छूते हुए निकल गई।

तभी तलवार के दूसरे सिरे को भी नागरस्सी ने जकड़ लिया

यह वही मस्तक है न जो एक स्त्री को अपमानित करके गर्वित हुआ था।
मौत के भय से जड़वत कुरूरक्ष केवल अपनी मौत का तमाशा ही देखता रह गया।
खच्च
आह..ह..ह..ह.ह
इस मस्तक को तेरे धड़ से अलग कर देगा नागराज।
...और उसके मस्तक को धड़ से अलग कर दिया नागराज ने।

इसी के साथ कुरूरक्ष की इहलीला समाप्त हो गई ...
और उसका सर कटकर सौडांगी के क़दमों में गिर गया।
धाड़ाक
देख कुरूरक्ष कुदरत का न्याय। एक स्त्री के साथ तूने अन्याय किया और आज तेरा सर एक स्त्री के ही क़दमों में पड़ा है।
एक दुष्ट को उसकी दुष्टता का दण्ड मिल चुका था।

त्रिशक्ति पुनः अपने-अपने स्वामी के पास लौट गई थी।
देर से ही सही पर ऐसे शैतानों का अंत तो निश्चित ही होता है।
मृत्यु के बाद अब इसकी आत्मा नर्क में यातनाएं सहेगी।
हम्म ! अब इसे षड्यंत्र के मास्टरमाइंड को भी दण्ड देने का समय आ गया है।

ये रही इस पूरी फिल्म की मेन विलेन। एक बिल्डिंग की छत से छुपकर सारा नजारा देख रही थी। नागराज के जासूस सर्पो की मदद से मैंने इसे पकड़ लिया।

अगर तुम स्त्री न होती तो मैं तुम्हें वह दण्ड देता कि अगले जन्म में भी तुम शक्तिमान के नाम से ही कांप जाती। फिलहाल तुम्हारा दण्ड इस शहर का रक्षक ही तय करेगा।

नागराज ने वह रुद्राक्ष मिस किलर से लेकर अपने पास रख लिया।
अब यह ध्रुव और धनंजय की बनाई मैक्सिमम सिक्योरिटी जेल में सड़ेगी जहाँ इसके जैसे और भी नमूने मौजूद हैं।
हाँ इसके लिए वही जगह सुरक्षित रहेगी।
अब किसी तरह हमें भी अपने समय में भेजने का प्रबंध करें मित्रों।
अब तुम इसका क्या करोगे नागराज।

जरूर मित्र भोकाल। तुम यहाँ इस रुद्राक्ष के जरिये आये हो और इसी के जरिये जाओगे पर कैसे, इसके लिए हमें इसकी वैज्ञानिक यानि
हमारी तरफ से आपको अनुमति है मित्र। हमें आप दोनों पर पूर्ण विश्वास है। तब तक हम सिया जी के साथ विश्वभ्रमण करेंगे। उनकी यह इच्छा थी।
किसी अनुसंधानकर्ता से जाँच करानी होगी अगर तुम अनुमति दो तो।
जांच के लिए हमें दिल्ली जाना होगा प्रोबॉट के पास।
नागद्वीप
जहाँ दोनों ने महात्मा कालदूत को इस घटना की पूरी जानकारी दी।
मैं आपसे और पूरे नागद्वीपवासियों से क्षमा मांगता हूँ। जो भी हुआ वह मेरी अज्ञानता के कारण हुआ। कृपया मुझे क्षमा करें।
हम जानते हैं शक्तिमान यह एक षड्यंत्र था, जिसमें हम सब फंसते चले गये। इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं। और इस रुद्राक्ष के बारे में हम सिर्फ इतना ही बता सकते हैं कि यह रुद्राक्ष एक प्रकार की ...
...कुंजी है जो दो विपरीत शक्तियों की ऊर्जा से आयामों को खोल सकता है या एक समय...
...द्वार का निर्माण भी कर सकता है। पर इसके लिए कितनी ऊर्जा चाहिए यह मैं अभी अनुमान नहीं लगा पा रहा हूँ।
तुम दोनों को एक बार इसकी वैज्ञानिक जांच करानी चाहिए।
हमने इसकी वैज्ञानिक जांच कराई थी जिससे हमें पता चला कि...

यहाँ आने से पहले हम इसे दिल्ली ले गये थे प्रोबोट के पास जिससे हमें पता चला कि...

अभी तक कि जांच से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि ये रुद्राक्ष एक प्रकार कि KEY है एक आयाम से दूसरे आयाम में आने-जाने के लिए। इससे समय धारा को काबू किया जा सकता है तथा एक आयाम से दूसरे आयाम में जाया जा सकता है चाहे वह कितनी ही दूर हो । आसान शब्दों में कहूँ तो यह एक शॉर्टकट CREATE कर सकता है। शायद इसी शॉर्टकट में फंसकर भोकाल यहाँ आ पहुंचा। इसमें से निकलती ऊर्जा...

ANALYSIS

...की जाँच से पता चला है कि यह पैरानॉर्मल ऊर्जा है जो विज्ञान की समझ से बाहर है। पर इतना अनुमान मैं लगा सकता हूँ कि यह सत्य ऊर्जा से चार्ज होता है। अब ऊर्जा की मात्रा कितनी होनी चाहिए और यह ऊर्जा को कैसे ग्रहण करता है यह फिलहाल मैं नहीं बता सकता। क्यों न तुम इसे किसी महापुरुष को दिखा लो।

फिर हमने इसे आपको दिखाने का फैसला किया।

हम्म ! रुद्राक्ष महादेव का है इसलिए इसके बारे में पता करना सरल न होगा। हमें घोर आराधना करनी होगी। इसके लिए तुम्हें यह रुद्राक्ष यहीं छोड़ना होगा।

जैसी आपकी इच्छा महात्मन !

पर इससे पूर्व कि आप साधना में लीन हों मेरी एक जिज्ञासा शांत करें महात्मन। कुरुक्षेत्र हमारी सत्य-ऊर्जा से स्वतन्त्र हुआ यानि हमारी आत्मा एक पुण्यात्मा है। फिर किल्विष की पाप-शक्ति का असर हम पर हुआ परन्तु भोकाल पर नहीं, ऐसा क्यों ?

इसका उत्तर तो तुम्हें शक्तिमान ही दे देता। पर तुमने मुझसे पूछा है तो मैं ही बता देता हूँ।

इसका उत्तर है-क्रोध। तुम दोनों में बदले और द्वेष की भावना से जो क्रोध उत्पन्न हुआ था उसी के कारण ही किल्विष की पाप-शक्ति तुम दोनों पर अपना प्रभाव दिखाने में सफल हो गई। जबकि भोकाल में न क्रोध था न बदले की भावना। आखिर क्रोध भी तो अंधेरे का ही एक रूप है किन्तु काली शक्तियां तुम्हारी पुण्य आत्मा को भी छू न सकी यह एक बहुत बड़ी बात है। तुम्हारी पुण्यात्मा बहुत शक्तिशाली है।

इतना कहकर महात्मा कालदूत साधना के लिए गुफा की ओर चल चल दिए।

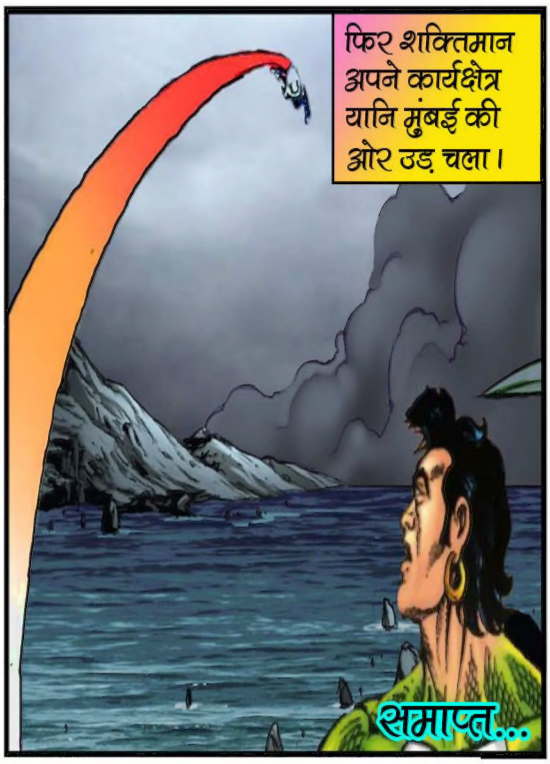

समाप्त। हाँ यह कहानी तो समाप्त हो गई, लेकिन मेरा मानना है कि जहाँ से एक कहानी खत्म होती है, वहीं से एक नई कहानी की शुरूआत होती है। इसलिए मैं इसे समाप्त नहीं कहूँगा। मैं इसे कहूँगा... **आरम्भ एक कयामत का**

JUNOON NEVER DIE

COMICS FAN CORNER-4

मित्रों ! जैसा कि आप जानते ही हैं हमने यह पेज कॉमिक्स फैन्स के अमूल्य रिव्यु के लिए रखा है जिसमें हम हर सीरीज के पूर्व अंक का फैन्स रिव्यु देते हैं । तो मित्रों पेश है हमारे ऐलान-ए-जंग सीरीज के प्रथम अंक ऐलान का फैन्स रिव्युज ।

Anonymous 30 March 2017 at 21:57

सबसे पहले हुकम महेन्द्रा भाई और बलबिन्दर भाई को बधाई। fmc की एक और नई उपलब्धि के लिए आप दोनों बधाई के पात्र हैं। कहानी मुझे बहुत पसंद आई और एडिटिंग भी काफी मस्त लगी । हालाँकि एडिटिंग थोड़ी और बेहतर हो सकती थी। पर फिर भी कॉमिक्स किसी भी मायने में कम नहीं है। हाँ डाइलॉग थोड़े और बेहतर होने चाहिए। यह मेरा पर्सनल सलाह है। मेरी रेटिंग 4/5 । आगामी कॉमिक्स का बेसब्री से इंतजार।

Reply Delete

Rakesh Kharara 10 May 2017 at 02:41

Elaan kafi dino se dwlod kar rki ti aaj oadhi or afsosh huwa ki esi lajwab comics ab tak kyu nhi padhi action sins kmal k te Background to Kabul e tarif te hi or unhe jis andazz se apne edit kiya or shaktimaan ke sath kasldoot ko lane ki story se hum to apke fan ho gye hai hukum mahendraa ji story me koi kami nhi chodi apne
Bas jankari chaiye ti
Who's siya and kaal
Kya naagraj ka ye koi or rup h ya koyi new super hero
Replay me please

Reply Delete

Delete

Anonymous 31 March 2017 at 00:27

@ Hukam Mahendra :: Comics padhi.. pehle try ke liye i can say its not bad.... u need to do extensive characters research..blending of images and dialogues bubbles need to be improved.... too long and extended fight scenes... image resolutions are not good thts why u need to do extensive character research..... I know its your first time and u dnt hv experience of Illuminati comics or FMC which are 2 best indian fan made comics i hv read.. so i believe u cn do a lot better in your next issues. Also may be personally i hv had my overdose of shaktimaan & doga in fan-made comics so tht reduced my interest and made me critical as well. try use more characters may be in small roles..... keep up the gud wrk... no contribution in fan-made comics is big or small... best of luck

Reply Delete

Anonymous 30 March 2017 at 21:57

सबसे पहले हुकम महेन्द्रा भाई और बलबिन्दर भाई को बधाई। fmc की एक और नई उपलब्धि के लिए आप दोनों बधाई के पात्र हैं। कहानी मुझे बहुत पसंद आई और एडिटिंग भी काफी मस्त लगी । हालाँकि एडिटिंग थोड़ी और बेहतर हो सकती थी। पर फिर भी कॉमिक्स किसी भी मायने में कम नहीं है। हाँ डाइलॉग थोड़े और बेहतर होने चाहिए। यह मेरा पर्सनल सलाह है। मेरी रेटिंग 4/5 । आगामी कॉमिक्स का बेसब्री से इंतजार।

Reply Delete

समस्त मित्रों के इन बेहतर रिव्युज के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद । आशा करता हूँ आपको हमारा यह प्रयास बहुत पसंद आ रहा होगा । मित्रों हमारे उत्साहवर्धन के लिए आप अपने अमूल्य रिव्यु हमारी ब्लॉग पर देते रहिये और हमसे जुड़े रहने के लिए आप हमारे फेसबुक पेज को फॉलो करें । धन्यवाद ।

आपका मित्र
बलविन्दर सिंह
team FMC

follow us on -: www.facebook.com/teamfanmadecomics
follow us on blog-: http//singhcomicsworld.blogspot.com

team FMC Present
APOCALYPSE
आरम्भ एक कयामत का...
story by HUKAM MAHENDRA

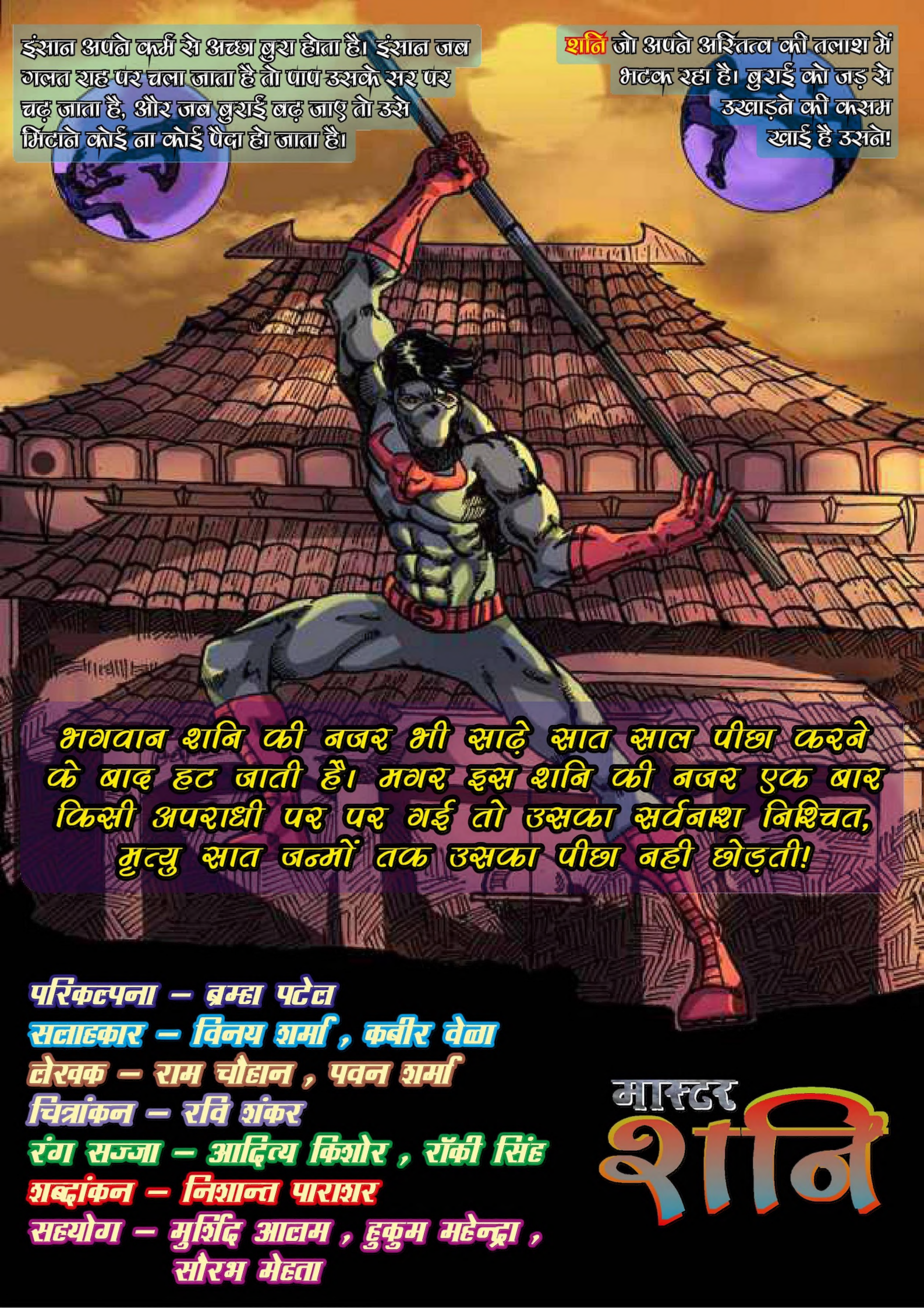

परिकल्पना – ब्रम्हा पटेल
सलाहकार – विनय शर्मा , कबीर वेला
लेखक – राम चौहान , पवन शर्मा
चित्रांकन – रवि शंकर
रंग सज्जा – आदित्य किशोर , रॉकी सिंह
शब्दांकन – निशान्त पाराशर
सहयोग – मुर्शिद आलम , हुकुम महेन्द्रा , सौरभ मेहता

मास्टर शनि